केश निर्णय

कर्त्ता

शिवरामदास उदासीन चक्रवर्ती

प्रकाशक अकाल प्रकाश बग्गा दिल्ली

(मूल्य केवल प्रेम)

सूचना

श्री सर्व पाठकों को विदित हो कि गुरुमत दर्शन पुस्तक श्री भागमल जी कृत गुरुमुखी में छपा हुआ हमने पढ़ा तो उसमें केश मन्डन भी एक विषय था जिसमें केशों को अपनी युक्ति और प्रमाणों द्वारा मनुष्य के लिये एक धार्मिक अंग सिद्ध किया गया था। और कुदरत की ओर से एक दी गई दात आदि कहकर मनुष्य के लिये केश रखने अति आवश्यक हैं। सिद्ध किया हुआ था परन्तु कुछ समय व्यतीत हुआ तो श्रीमान् स्वामी शिवराम दास उदासीन चक्रवर्ती जी हमारे नगर में पधारे तो उनसे हमारी भेंट हुई फिर हमने केशों के लिये भी बात चीत की परन्तु पूर्वोक्त गुरुमत दर्शन में से ही हमने प्रश्न उनके समक्ष रखे तो उन्होंने उन प्रश्नों का उत्तर बहुत विद्वता पूर्ण निर्पक्ष रूप में दिया तो वह प्रश्न और उत्तरों रूप यह पुस्तक ही हमारी प्रेरणा से स्वामी जी ने त्यार करदी इस पुस्तक में जो हमने प्रश्न किये है वह करीबन सब ही पूर्वोक्त गुरुमत दर्शन पुस्तक के पृष्ठ ९२ से लेकर पृष्ठ ११५ तक में से ही किये गए हैं जिसको आवश्य-

कता हो वह वहाँ से इन प्रश्नों को देख सकता है पहले पृष्ठ ६२ पर ही लिखा है कि केश कुदर्ती चिह्न और रब्बी दात हैं आदि......और अब यह पुस्तक छाप के हम पाठकों की धर्मार्थ भेंट कर रहे हैं कि पाठक गण पढ़कर लाभ उठाएँ।

प्रकाशक
अकाल प्रकाश बग्गा
११
३३३३
कूचा जलाल बुखारी दरियागंज दिल्ली

दूसरा पता
अकाल प्रकाश बग्गा,
मार्फत श्री गुसांई प्रीतम दास,
बी ८२ कालका जी
नई दिल्ली १६

मंगल

आदि अंत अरु मध्य में है जु इकरस रूप ।
मन बुद्धि नहिं गहि सके महिमा अहे अनुप ।
सगुन रूप ह्वै भक्ति हित करे विविधि व्यवहार ।
नमो करुं कर जोर कर ईश सर्वज्ञ अपार ।
गुरु रूप पुनः होय कर समझायो बहू भेव ।
चरन कमल रज शीश धर नमों करुं गुरुदेव ।
निर्णय करूं मैं केश को धार हिये गुरु ज्ञान ।
संश्य सकल नसाय कर करो प्रभो कल्यान ।
दास जान कृपा करो आयो शर्ण तुहार ।
दूर करो अज्ञान तम कर बोध भानु उजियार ।

केश निर्णय

(१) प्रश्न—केश धारण करने मनुष्य के लिये आवश्यक हैं या नहीं।

उत्तर—केशों का मनुष्य के मानव धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं किन्तु अपनी रुची अनुसार कोई केश धारण करे या ना करे कोई हानी नहीं।

(२) प्रश्न—केश ना धारण करने से हानी क्यों नहीं। क्योंकि केश कुदर्ति (ईश्वरीय) चिह्न और ईश्वरीय दात (विभूति) हैं। मनुष्य चाहें आयू पर्यन्त केश कटवाते रहें परन्तु ईश्वर फिर भी इन केशों को बड़े करने में ही तत्पर रहता है।

उत्तर—यहाँ प्रश्न होता है कि केश ईश्वर का दिया हुआ चिह्न मानव धर्म का चिह्न है या मनुष्य शरीर का चिह्न है। यदि मानव धर्म का चिह्न कहा जाए तो कैसे फिर तो कोई युक्ति या प्रमाण प्रकट करना चाहिये। और यदि शरीर का चिह्न कहें तो मनुष्य शरीर की केशों के बिना भी पहचान हो सकती है अतः मनुष्य के लिये केश धारण करने

आवश्यक नहीं।

शेष ईश्वरीय दातें (विभूतियें) और भी बहुत सी हैं परन्तु मनुष्य अपने हानी लाभों को मुख्य रख कर किसी विभूती को धारण करते हैं और किसी को त्याग देते हैं। जैसे केशों को साफ न किया जाय तो बीच ईश्वर की इच्छा से जीव उत्पन्न हो जाते हैं और दस रोज स्नान आदि क्रिया न की जाये तो शरीर में मैल दुर्गन्ध आदि भी कुदरत की ओर से पैदा हो जाते हैं। परन्तु मनुष्य इन्हीं के बचाव के लिये प्रतिदिन आयू पर्यन्त साबन आदि से स्नान कर के केशों को साफ रखने के लिये प्रयत्न करते ही रहते हैं परन्तु यहां पर कुदरतिदात (ईश्वरीय विभूती) की प्रवाह नहीं करते। तैसे यदि किसी को केशों का कोई कष्ट होवे तो वह आयू पर्यन्त केश कटवाते भी रहते हैं।

(३) प्रश्नः—केशों का मनुष्य शरीर के साथ गहरा सम्बन्ध है। कारण यह कि बाल्यावस्था से लेकर मृत्यू पर्यन्त शारीरिक बल के साथ इन्हों का भी बढ़ना घटना होता रहता है।

उत्तर—यहाँ पर प्रश्न होता है कि मनुष्य शरीर के अतिरिक्त अन्य किसी पशू पक्षी आदिक शरीरों के साथ केशों का गहरा (घनिष्ट) सम्बन्ध क्यों नहीं क्योंकि मनुष्य शरीर को केशों का उनसे क्या विशेष लाभ पहुंचता है।

शेष बाल्यावस्था से लेकर मृत्यू पर्यन्त शारीरिक बल के साथ साथ केशों का बढ़ना घटना होने से शरीर को कोई हानी लाभ नहीं पहुंचता, क्योंकि केश चाहे सिर पर हों या न हों शारीरिक बल तो न्यून अधिक (घटना बढ़ना) होता ही रहेगा। यदि कहा जाए कि केश शरीर के शेष अन्य अंगों की तरह एक अंग हैं। तो शेष अंगों को काटने से जैसे दर्द होता है तैंसे केशों को काटने से भी दर्द होना चाहिये परन्तु नहीं होता। यदि हो तो कोई सज्जन भी प्रसन्नता पूर्वक केश कटवाने की कोशिश ना करे। अतः शेष अंगों की तरह यह अंग नहीं हैं तथा यदि शारीरिक बल के साथ साथ केशों का बढ़ना घटना होता है। यहि घनिष्ट सम्बन्ध है तो ऐसे फिर हाथ और पाँवों के नखों का भी बढ़ना घटना होता रहता है क्योंकि बचपन में यह नख (नाखून) कोमल और जवानी में

कठोर तथा वृद्धावस्था में कमज़ोर हो जाते है। अतः इस युक्ति के साथ नखों का भी शरीर के साथ घनिष्ट सम्बन्ध होने से नख भी नहीं कटवाने चाहिये फिर तो नखों को लम्बा करना भी आवश्यक होगा।

(४) प्रश्न—अनेकों डाक्टर साबत कर चुके हैं कि केशों का निरोग्यता के साथ भी पूर्ण सम्बन्ध है और दिमाग की रक्षा के लिये बाहर की दुख दाई गर्मी और ठण्डी को तथा भीषण धूप या ठण्डी से उत्पन्न होने वाले रोग यथा जुकाम, सिर पीड़ा, छींक आदि को भी रोकने के लिये सामर्थ रखते हैं।

उत्तरः—हमने आज तक किसी एक डाक्टर से भी नही सुना कि केश भी शरीर की निरोग्यता का कोई साधन है। यदि यह बात सत्य होती तो सरकार के स्वास्थ्य विभाग (महकमें) की ओर से प्रतिदिन गाँव गाँव में घूम कर भाषणों स्पीकरों या समाचार पत्रों द्वारा यह प्रचार होता कि केश नही कटवाने चाहिये क्योंकि इन्हों के रखने से शरीर निरोग्य रहता है परन्तु स्वास्थ्य विभाग ने ऐसा उपदेश कभी भी नही किया। शेष हिन्दुस्तान से बाहर के देशों में भी यह

बात अभी तक नहीं पाई गई और हम जितने भी आज केश धारी सज्जनों के दर्शन करते हैं उन्हों को भी गर्मी और ठण्डी बिना केशों वालों के तुल्य ही लगती है। और गर्मी की ऋतु में कई केश धारी सज्जन पगड़ी (दस्तार) उत्तार कर कहते सुने जाते हैं कि गर्मी बहुत कष्ट दे रही है तथा ठण्डी में केश धारी सज्जनों को भी जुकाम, सिर पीड़ा आदि रोग हो जाते हैं यह हम हर रोज देखते रहते हैं। अपितु माताएँ केश धारी होती हैं परन्तु सिर दर्द जुकाम, आदि उन्हों को भी होते ही रहते हैं। और केश धारी सज्जन हमारे बहुत मित्र हैं उन्हों के साथ हमारा घनिष्ट सम्बन्ध भी है किन्तु उन्हों को भी हम देखते हैं कि सिर दर्द जुकाम आदि बिना केश वालों के तुल्य ही होता है। अतः यह बात अनुभव (तजुर्बे) के विपरीत है इस लिये कोई महत्व नहीं रखती।

(५) प्रश्नः रोग तथा निरोग्यता का पता भी केशों के चिट्टे और, कक्के, पीले टूटने से और काले कोमल चमकीले पक्के होने से लग सकता है।

उत्तरः हम कईबार अपनी आयु में डाक्टर और वैद्यों, हकीमोंके पास गए हैं किन्तु हमारे रोग (बिमारी)

का पता किसी वैद्य या डाक्टर ने आज तक हमारा कोई केश (बाल) तोड़कर नहीं किया बल्कि पिसाब आदि की तो प्रिक्षा करते देखे गए हैं परन्तु केश तोड़ कर निरीक्षण करते नहीं देखे इस लिये यह दलील (उक्ति) भी कोई वज़न नहीं रखती और अन्य बाह्य देशों में जो करोड़ों लोग हैं तथा हिन्दुस्तान में भी कई करोड़ हैं जो केश धारण नहीं करते तो उन्हों के रोगों का पता डाक्टर वैद्य कैसे करते होंगे।

(६) प्रश्नः—कई डाक्टरों ने यहाँ तक तजुर्बे किये हैं कि हज़ार हजार वर्ष बल्कि इससे भी कई समय पहले की कबरें खुदवाईं जिन्हों में से मृतक शरीरों की अस्थियें (हड्डियाँ) भी नहीं मिल सकीं परन्तु सिर के केश जैसे के तैसे निकले हैं जिससे डाक्टरों नें सिद्ध किया है कि केश शरीर का शक्ति सम्पन्न और पुष्टि कारक हिस्सा (भाग) हैं।

उत्तरः—आप के प्रश्न कुछ ऐसे ही हैं कि जिन्हों का लाभ कुछ नहीं क्योंकि केश अस्थियों से पहले कबरों में नष्ट ना भी हुये हों तो भी मनुष्य को क्या लाभ पहुचता है।

पहले तो यह बात होगी ही नहीं क्योंकि कई प्राचीन कबरें मुलतान आदि शहरों में खुदी हुई देखने का हमको अवसर मिला है किन्तु अस्थियें तो कुछ निर्बल (खस्ता) हुई दृष्टि में पड़ी हैं परन्तु केश (वाल) बीच में कोई भी नहीं देखा तथा यदि ऐसे हो भी तो भी जीवन काल में केश जरूरी रखने से मनुष्य को क्या लाभ सिद्ध हो सकता है। यदि मृत्यु के पश्चात ही यह लाभ होता है तो यह भी मुसलमानों को हो सकता है क्योंकि मुसलमानों के अतिरिक्त सब ही हिन्दू आदिक लोग मृतक शरीर को दाह कर देते हैं तो केश सब से पहले ही दाह हो (सड़) जाते हैं तो यह लाभ हिन्दु आदिकों को नहीं हो सकता। शेष जीवन काल में यदि केश शरीर का पुष्टि कारक विभाग हैं तो जिन्हों शरीरों ने केश नहीं धारण किये हुए क्या उन्हों के शरीर निर्बल ही होते हैं ? यदि यही बात हो तो यह तजुर्बे से खाली हैं क्योंकि जितने भी हिन्दुस्तान के या बाह्य देशों के मल (पहलवान) कुश्ती लड़ते हैं उन्हों में से देखा गया है कि वह करीबन सब ही केशों के बिना ही होते हैं। कोई एक अर्ध ही केश धारी होता है।

(७) प्रश्न—केश कुदरत की ओर से कृपा करके दिए हुए शृंगारों में से श्रोमणि शृङ्गार हैं क्योंकि जिस पुरुष की दाढ़ी या सिर पर केश ना हों वह कोभ्भा कट रुप भास्ता है बल्कि लोग उसको गञ्जा खोदा' टटरी वाला आदि कह कर टिच्चकरें करते हैं और वह विचारा गञ्ज वालचर आदि रोगों के अनेकों उपायों के करने में ही व्यस्त रहता है।

उत्तर—कुदरत की ओर से दिये हुये केश शृंगार रुप नहीं हैं किन्तु तेल साबन आदि के साथ साफ करके शृङ्गार रुप बनाए जाते हैं और कुदरत (ईश्वर की शक्ति) ने शरीर को नग्न ही उत्पन्न किया है। परन्तु नग्न रहना आज के लोग शृँगार रुप नहीं समझते। विपरीत इसके बस्त्र भूषण धारण करने को शृङ्गार रुप समझते हैं और कुदरत की ओर से तो अज (बक्करे) कुकट (मुर्गे) आदि भी शृँगार रुप होकर ही आए हैं किन्तु आज कल के कई लोग उनको काट कर उनका शृंगार नष्ट करके अपना (उनको खाने का) स्वार्थ सिद्ध करते हैं। अतः कुदरत की ओर से बखशिस किये हुए अनेकों शृँगार हैं जिन्होंको मनुष्य अपनी हानी लाभों के लिये नष्ट करने

में स्वतन्त्र रहता है। शेष शृँगार (सुन्दरता) वह है जो किसी के मन को अच्छी लगती है यदि कुदरत की ओर से सुन्दरता प्राप्त होती तो सभी को एक जैसी ही प्रतीत होती प्ररन्तु ऐसी बात नहीं है वेष भूशा सर्व की भिन्न भिन्न है।

और ऊपर जो प्रश्न किया गया हैं कि जिसके दाढ़ी केश नाँ हों वह कोभा कट रुप भास्ता है। यहाँ पर प्रश्न होता है कि किसको भास्ता है उत्तर यह है कि जिनके दाढ़ी केश हों उनको ऐसा भास्ता है किन्तु जिनके ना हों उनको नहीं। क्योंकि जिन देशों में दाढ़ी केश नहीं लम्बे किये जाते उन लोगों को लम्बे दाढ़ी केशों वाला मनुष्य सुन्दर नहीं भास्ता इसलिये यह कोई समष्टि रुप से निर्णय नहीं दिया जा सकता कि दाढ़ी केशों वाला पुरुष ही सुन्दर लगता है या दाढ़ी केशों के बिना ही हो तो वह सुन्दर लगता है।

शेष रही बात उस पुरुष को गञ्जा खोदा टुटरी वाला आदि कहकर टिचकरें करते हैं तो यह भी कोई नियम नहीं क्योंकि जिन्हों के दाढ़ी और सिर पर केश नहीं होते वह लोग दाढ़ी और केशों वालों को कई

प्रकार की टिच्चकरें करते रहते हैं। पर यह कोई सभ्यता नहीं यह समझदारी से बाहर की बातें हैं और ऊपर कहा गया है कि वह गञ्ज वालचर आदि रोगों के उपायों के करने में ही व्यस्त (फंसा) रहता है तो उनको केश अच्छे लगते होंगे परन्तु जिनको अच्छे नहीं लगते जैसे सन्यासी साधू दाढ़ी और केशों को मूल से रगड़ कर चट्टम करवाए देते हैं तो उन्हों को कभी गञ्ज आदि रोग होवे भी तो वह क्या औषधि आदि उपाय करेंगे अतः यह पहले ही कहा गया है कि सुन्दरता अपनी अपनी रुचि के अधीन मानी जाती है केवल केशों में नहीं।

(८) प्रश्नः—लड़ाई झगड़ों में साधारण चोटों और युद्ध जंग के समय अनेकों आक्रमणों से सुरक्षित रखने वाले साधनों में से यह केश एक कुदर्ती साधन तो प्रत्यक्ष हो है।

उत्तरः—चित्र को एक ही ओर से नहीं देखना चाहिये केश यदि लड़ाई झगड़ों में चोटों से रक्षा करते हैं तो लड़ाई झगड़े में कभी किसी का हाथ किसी के दाढ़ी और केशों को पड़ जाए तो उस पकड़े

हुए मनुष्य का वहां से छूटना भी असम्भव हो जाता है इसलिये यह दलील (उचित) प्रत्येक मनुष्य को दाड़ी और केश रखने के लिये बाध्य नहीं करता परन्तु जिस पुरुष को दाड़ी केश रखने में कोई लाभ हो वह रख सकता है और जिसको कोई लाभ न हो वह न रखे तो उनकी इच्छा है।

(९) प्रश्न: इस लिये केशों को अनन्त सिफतों का भण्डार जान कर प्राचीन समय में प्रत्येक मनुष्य केशों का अंग संग रखना (नित्य धारण करना) मुख्य धर्म औंर कटवाने पाप समझता था।

उत्तर:—यहां पर प्रश्न यह है कि केशों की अनन्त सिफतें (उपमां) यहि हैं जिन्हों का वर्णन आपने पीछे किया है या कोई और भी है, यदि यही है तो इन्हों का विचार ऊपर किया जा चुका है और यदि कोई और भी हों तो वह भी कृपया प्रकट कर ही देवो शेष यह कौन से प्राचीन पुस्तक में लिखा है कि प्रत्येक मनुष्य केशों को नित्य धारण करना मुख्य धर्म समझता था और कटवाने पाप, तथा यहां यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि मुख्य धर्म का अर्थ यहां

पर मानव धर्म है अथवा कोई और धर्म है और केश कटवाने पाप का अर्थ भी यहां पर ईश्वर की ओर से पाप है या किसी संस्था या ग्रुप (सुसाइटी) की ओर से स्थापित किया हुआ पाप था यदि किसी संस्था की ओर से विधान किया गया पाप था तो वह प्राचीन समय में कौन सी ऐसी संस्था थी और उसका वर्णन कोन सी पुस्तक में है, तथा यदि किसी एक संस्था ने यह विधान बनाया भी हो तो फिर भी वह मनुष्य मात्र के लिये मानने योग्य नहीं हो सकता किन्तु उस संस्था के सदस्यों के लिये ही मान्य हो सकता है और यदि ईश्वर की ओर से पाप है तो कैसे क्योंकि ईश्वर की बनाई हुई अन्य अनन्त वस्तुएं हैं जिन्हों को मनुष्य अपनी हानि और लाभ को सन्मुख रख कर नष्ट करने का प्रयत्न करते हैं परन्तु फिर भी उन्हों को पापी नहीं माना जाता।

शेष मुख्य धर्म का अर्थ यदि मानव धर्म है तो कैसे क्योंकि मानव धर्म वहि हो सकता है जिसके बिना मनुष्य अध्यात्म और भौतक आदि कोई उन्नति ना कर सकता हो परन्तु सैकड़ों मनुष्य हो चुके हैं जिन्हों के सिर पर केश नहीं थे किन्तु अध्यात्म और

भौतक उन्नति की चोटी तक पहुंचे हुये थे । अतः यह केश मानव धर्म में सम्मिलित नहीं किये जा सकते इसलिये केशों का रखना या न रखना मनुष्य की अपनी रुचि के अधीन हैं और वह रुचि किसी देश के भेष भूषा प्रथा अथवा किसी संस्था आदिकों के स्थापित किये हुए नियमों के अनुसार बन जाती है,

(१०) प्रश्नः—मुसलमानों की ओर देखो तो बावा आदम से लेकर इस्राईल, खवाज, खिजर, दानिएल यूसफ, मूसा, दाउद और मुलेमान आदि सब ही पैगम्बर केश धारी थे ।

उत्तरः—जब तक कोई प्रमाण व्यक्त न किया जाए उपर बताए हुए पैगम्बरों का केश धारी होना निःसन्देह नहीं माना जा सकता और ऊपर की गई कल्पना अनुसार कभी वह पैगम्बर केश धारी भी हों तो हर्ज भी क्या है क्योंकि पीछे बताया गया है कि मनुष्य अपनी रुचि के अधीन केशों को रखते और मुण्डवाते हैं, अतः ऊपर बताए गए पैगम्बरों ने यदि अपनी रुचि अनुसार केश धारण किये भी हों तो इस से मनुष्य मात्र के लिये केश रखने सिद्ध नहीं

हो जाते।

यहां पर भी देखना यह है कि मुसलमानों की किसी धर्म पुस्तक में मनुष्य मात्र के लिये या केवल मुसलमानों के लिये कहीं केश धारण करने जरूरी लिखे हैं, बल्कि जब खोज की जाय तो विपरीत इनके हज़रत इब्राहीम का तरीका ही केश (बाल) कटवाने मुन्डन करवाने का प्रसिद्ध था शेष संपूर्ण मुसलमानों की इबादत का बड़ा तरीका हज्ज है वहां काबे जाकर मुसलमानों के लिये मुन्डन कराना आवश्यक यह भी प्रसिद्ध है, यथा हज़रत मुहम्मद साहब और आपके बहुत से साथियों ने हज्ज के अवसर पर अपने सिरों को मुन्डवाया और कुछ सज्जनों ने कत्राया (भाव बाल कटवाए) यह देखो बुखारी शरीफ, किताब हज्ज जिल्द १ तथाः हज़रत मुहम्मद साहब ने सिर मुन्डाने (मुन्डन कराने) वालों के लिये तीन बार दुवा मांगी और कतराने (केश कटवाने) वालों के लिये एक बार दुवा मांगी और इसका प्रकाशक कहता है कि आलम लोग इसी चीज को अच्छा समझते हैं कि सिर मुन्डाया जाय, यह सब देखो, त्रिमज़ी जिल्द १ किताब हज्ज।

शेष मुसलमानों की बड़ी परम पवित्र मानी हुई कुरान शरीफ में भी लिखा है देखो पारा २६ सूरत फ़तह रकूह ४ कि निःसन्देह अल्लाह ने अपने रसूल को असल में सच्चा ही स्वप्न दिखाया था कि खुदा चाहे तो तुम हराम मस्जिद (काबे) में बेखौफ होकर शान्ति से प्राप्त होंगे (वहां जाकर) तुम (कछुक) तो अपना सिर मुन्डवाओगे और (कछुक) बाल ही कत्रा-ओगे, भाव जिस वार्ता का तुम को पता नहीं था वह खुदा को (पहले) से ही मालूम था। अतः मुसलमान मत की जब मक्के की हज्ज ही तब तक प्रवान नहीं होती कि जब तक केश न मुन्डवाए जाएँ तो उन्हों के किसी पैगम्बर के स्वभावक केश रखे हुए उनके धर्म से सम्बन्धित नहीं हो सकते।

और यदि मुसलमानों के मत में कभी केश रखने आवश्यक भी हों तो भी मनुष्य मात्र के लिये केश रखने सिद्ध नहीं हो सकते क्योंकि जो लोग मुसलमान नहीं उन्हों के ऊपर मुसलमानों का कोई नियम नहीं लागू किया जा सकता, इसलिये किसी एक फिर्के या ग्रुप अथवा संस्था का स्थापित किया हुआ कोई नियम सम्पूर्ण मनुष्यों के लिये ही वह धर्म नहीं

माना जा सकता ।

(११) प्रश्नः—बाईबल आदि पुस्तकें पढ़ो तो इसाईयों के पैगम्बर यसूह मसीह, सैमसून आदकों के सिर पर केश थे लिखे हैं ।

उत्तरः—यह प्रश्न भी इसाई लोगों के ऊपर ही हो सकता है कि उन्हों के इन पैगम्बरों ने केश धारण किए हुए थे तो आज इसाई मत वाले पुरुष छोड़ कर उनकी स्त्रियें भी केश कटवा देती हैं तो क्यों कटवाती हैं ? और शेष सर्व मनुष्यों के ऊपर इसाई मत के फिरके का केश रखने का नियम लागू नहीं हो सकता और यदि खोज की जाए तो इसाई मत में भी केश रखने कोई उन्हों का धर्म सम्बन्धी चिह्न या कोई साधन नहीं सिद्ध होते, किन्तु किसी पैगम्बर या किसी विशेष व्यक्ति ने केश रखे भी हैं तो वह उन्हों की अपनी रुचि के अधीन ही रखे सिद्ध होते हैं, क्योंकि उसी बाईबल में ही लिखा है कि वह अपने सिर न मुन्डावे और चोटी बढ़ने नो देवें पर वह अपने सिर के बाल कत्रावें (कटवावें) हिजकिएल की पुस्तक (बाब) प्रब ४४ ऐत २० (ऐहद् नामां) नियम पुरानां ।

इस ऊपर के बाईबल के कथन में लिखा है कि सिर न मुन्डावे किन्तु साथ ही आगे लिख दिया है कि अपने सिर के बाल कटवावे । इसका भाव यहि सिद्ध होता है कि उस्तरे के साथ न मुन्डावे किन्तु केञ्ची से बाल जरूर कटावे । अतः तो भी केश रखने सिद्ध ना हुए तथा इसी बाईबल में ही आगे लिखा है कि क्या प्रकृति आप ही तुम्हें नहीं सिखाती है किं यदि पुरुष लम्बे बाल रखे तो उसका अनादर है, करिन्थियों को (बाब) प्रव ११ ऐत १४ (ऐहदनामां) नियम नया (हिन्दी में छपी) अतः बोईबल विपरीत इसके यह सिद्ध करती है कि पुरुष लम्बे बाल रखे तो अनादर है भाव सत्कार नहीं, तो बाईबल में से केश रखने सिद्ध नहीं होते और केञ्ची से कटवाने का नियम भी इसाईयों ऊपर ही लागू हो सकता है और किसी मज़हब या फिरके पर नहीं ।

(१२)—प्रश्नः हिन्दु मत के ग्रन्थों की खोज की जाए तो ब्रह्मा के केशों में से नाग उत्पन्न हुए लिखे हैं ।

उत्तरः—हमने यह खोज नहीं की किन्तु यदि यह बात ठीक भी हो तो ब्रह्मा ने केश धारण किये तो बीच

में से नाग (सांप) ही पैदा हुए तो ब्रह्मा को केश रखने का क्या लाभ प्राप्त हुआ। इसमें से विपरीत यह शिक्षा मिलती है कि सामर्थवान ब्रह्मा ने केश धारण किये तो बीच में सांप पैदा हुए तो जो मनुष्य अ.स-मर्थ हैं वह केश धारण करेगें तो कब किसी अच्छी वस्तू के पैदा होने की आशा हो सकेगी।

शेष यदि यह आग्रह किया जाए कि जो कुछ ब्रह्मा ने किया है वहि कुछ सर्व मनुष्यों को करना चाहिये तो ऐसे शतपथ १४।३।४।३। तथा मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ३२ में से सिद्ध होता है कि ब्रह्मां ने अपने शरीर के आधे (बायँ) हिस्से को स्त्री रूप किया तो संसार और बिराट पुत्र पैदा किया। तो क्या सर्व मनुष्यों को भी चाहिये कि अपने शरीर के अर्ध भाग को काट कर स्त्री रूप बनाएँ।

यदि ऐसे नहीं चाहिये तो ब्रह्मां ने यदि नागों को पैदा करने के लिये केश धार्ण किये भी हों तो आम (सर्व) मनुष्य कैसे इस ब्रह्मा के चरित्र को धारण कर सकते हैं।

और सर्व मनुष्यों के लिये केश रखने आवश्यक

होते तो ब्रह्मा जी अपने उपदेशों में केश रखने को *आज्ञा भी देते।*

(१३) प्रश्नः—जटा जूट सिर गङ्ग बिराजे, आदि वाक्यों से शिव जी महाराज के सिर पर भी केश सिद्ध होते हैं।

उत्तरः—शिव जी ने अपनी रुची से यदि जटा धारण की हैं तो वह सर्व मनुष्यों के लिये धारण करने का नियम नहीं हो सकता। कि जब तक स्वयं शंकर भगवान अपने किसी उपदेश में केश धारण करने का विधान नहीं स्थापित करते।

शेष ऊपर जो लिखा है जटा जूट सिर गंग बिराजे कि शिव जी की जटाओं में गङ्गा बिराजती है किन्तु आम लोगों के सिर में एक पाँव भर पानी भी नहीं ठहर सकता तो आम मनुष्य शिव जी की यह रीस (अनुकरण) करके केश कैसे धारण कर सकते हैं। किंतु अपनी रुची अनुसार चाहे कोई केश धारण करले इसमें कोई बाधा नहीं, और यदि कोई आग्रह ही किया जाय तो शिव जी के सिर पर ऊपर कहे वाक्य अनुसार जटें सिद्ध होती हैं, केवल केश (बाल) मात्र नहीं

इसलिये शिव जी की नकल करके कोई धारण करे भी तो जटा ही धारण कर सकता है केवल केश मात्र नहीं। यदि कहा जाए कि केश और जटा एक ही वस्तु हैं तो नहीं क्योंकि केश कङ्घे के साथ प्रति दिन साफ किए जा सकते हैं किंतू जटा नहीं कंघे के साथ साफ की जा सकती।

शेष शिव जी की जटा का यदि लोगों को केश या जटा रखवाने का उद्देश्य होता तो सन्यासी जो केवल शिव जी के ही उपासक हैं वह सब ही जटा या केश धारी होते परन्तु सन्यासियों के बड़े-बड़े पढ़े लिखे हुये पण्डित मण्डलेश्वर अपने सिरों के केश उस्तरे के साथ मुन्डवा कर रखते हैं।

(१४) प्रश्नः—अवतार श्रेणी की तर्फ देखो तो बावन, परसराम, रामचन्द्र, कृष्ण, कपल, बुद्ध, आदि केशधारी थे।

उत्तरः—यह किसी प्रमाण द्वारा प्रकट नहीं किया गया कि ऊपर कहे हुये सब ही अवतार केश धारी थे केवल यहां लिख ही दिया है, यदि यह सबूत दिया जाय कि, राम,कृष्ण आदि अवतारों की मूर्तिएँ

(तस्वीरों) में सिर पर अलकें आदि केश दिखाई देते हैं, सो यह कोई सन्तोष जनक सबूत नहीं क्योंकि मूर्तियें (फोटो) बनाने वाले अपनी रुची के अनुसार उन्हों के रूप (शकलें) बनाते हैं, जो एक दूसरे के साथ नहीं मिलती अतएव यह कोई पक्का सबूत नहीं कि उनके सिर पर केश धारण किये हूए थे । यदि यहि पक्का सबूत मान लें तो श्री विष्णु भगवान और श्री राम-चन्द्र तथा श्री कृष्ण भगवान आदिकों की मूर्तियों के दर्शन करने से किसी की भी कोई दाढ़ी और मूंछ दृष्टि नहीं पड़ती तो क्या यह सब ही खोदे (जिनकी दाढ़ी पैदा ही नहीं होती) ही हूये हैं यदि नहीं तो फिर वह दाढ़ी और मूंछों को मुन्डवा कर ही रखते होंगे, यदि ऐसे ही हो तो वह केशधारी क्या हूयें और ऊपर कहे हूए अवतारों के केशधारी होने का सबूत भी किसी धर्म ग्रन्थ में से प्रमाणित होना चाहिये था उन्होंने किसी धर्म ग्रन्थ में यह उपदेश किया हो कि केशों के बिना यह जीव अधर्मी होता है और केशों के धारण करने से यह जीव धर्मात्मा हो जाता है, परन्तु ऐसा कोई प्रमाण मिलता नहीं अतः उन्हों का केशधारी होना सन्देह युक्त है और उन्हों में से किसी ने अपनी रुची अनुसार जटा या

अल्कें (ज़ुल्फें) धारण की हों तो वह सर्व मनुष्यों के लिये केश धारण करने का उद्देश्य नहीं मानी जा सकती ।

(१५) प्रश्न: ऋषि, मुनियों की ओर दृष्टि डालो तो कष्यप: विशिष्ट: विश्वामित्र: भार्द्वाज: अगस्त, दुर्बाशा बाल्मीकि: वेदव्यास जटा जूट केश धारी हूये हैं ।

उत्तर:—यह भी किसी धर्म ग्रन्थ का प्रमाण देकर नहीं कहा कि यह सब ही ऋषि मुनि केश धारी हूये हैं किन्तु केवल कह ही दिया है । अत: केवल कह देना मात्र ही किसी सच्चाई को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त नहीं होता । यदि ऊपर बताए गए महान पुरुषों का केश धारी होना भी उन्हों की किसी मूर्ति (फोटो) को देखकर ही कहें तो यह पीछे बता चुके हैं कि फोटो बनाने बाले अपनी अपनी रुची के अनुसार ही बनाते जाते हैं, इसलिये यह कोई सबूत नहीं परन्तु पूर्वोक्त ऋषि मुनियों ने यदि आपनी रुची अनुसार कभी जटा या केश धारण भी किये हों तो यह मनुष्य को स्वत्रंता है चाहे केश रखे या मुन्डवा देवे तो इस से आम मनुष्यो के लिये यह नियम कैसें

स्थापित हो सकता है कि केश रखने आवश्यक हैं, कारन यह कि जब तक पूर्वोक्त किसी ऋषि मुनि के लिखे वाक्यों से यह न दिखाया जाए कि केशों के *बिना* इस मनुष्य जीव की सद्गति नहीं हो सकती *या* केशों के बिना यह मनुष्य नीच होता है ।

शेष पूर्वोक्त जटा जूट का अर्थ आप केश धारी कर रहे हैं क्या आप यह नहीं जानते कि जटा जूट होना और केशों को तेल साबुन आदि लगाकर साफ करके रखना यह अलग अलग है क्योंकि जटा आदि निर्वाण नामके साधूओं का चिह्न मानी जाती हैं और केवल केश मात्र नहीं।

(१६) प्रश्नः—मन्दरों में देवी देवतों की मूर्तिएं की तर्फ देखा जाए तो किसी का सिर के आगे जूड़ा किसी का बीच में किसी का पीछे किसी के खुले केश दीखते हैं ।

उत्तरः—मन्दरों में भी देवी देवों की मूर्तिएं बनाने वालों ने अपनी अपनी रुचि के अनुसार ही बनाई हैं कोई ऐसी मूर्ति स्थापित नहीं दीखती जो सत्ययुग और त्रेता आदि युगों की हों। तो भी सब ही मन्दरों

में मूर्तियों के सिर पर केशों के जूड़े और खुले केश आदिक भी नहीं होते किन्तु सिर पर मुकट(बूहां)आदि भी विराजमान होते हैं। इसलिये यह नियम नहीं जो आप कह रहे हैं और किसी के सिर पर जटा ही होती हैं उन्हीं के जूड़े भी बांधे हुये होते हैं जिन जटाओं का विचार पीछे किया जा चुका है और खुले केशों का भी पीछे कहा गया है कि जुल्फें आदि रखने को भी कई देशों में प्रथा (रस्सम) है जैसे उड़ीसा में कई जातियें, दाड़ी मुन्डवा कर सिर पर केश रखती हैं और बलोचस्थान में कई मुसलमान सिर पर जुल्फें रखते हैं और फिर वह गले में पाई फिरते रहते हैं। अतः यह केश कोई आत्मिक या व्यवहारक उन्नती का साधन नहीं हैं जो मनुष्य के लिये आवश्यक हों। यदि यहि बात होती तो पूर्वोक्त किसी देवी देव के मुखार्विन्द से निकला हुआ यह वाक्य प्रसिद्ध साधनों में होता कि किसी न किसी तरीके से केश रखने आवश्यक हैं क्योंकि केशों के बिना मनुष्य की सद्गति नहीं हो सकती और मनुष्य का पतन ही रहता हैं, परन्तु ऐसा किसी भी देवी देव ने नहीं कहा इसलिये यह दलील भी कोई अर्थ नहीं रखती कि मन्दरों में देवी देवों की मूर्तियों के

ज़ड़े आदि दीखते हैं।

(१७) प्रश्नः—रामायण के अयोध्या काण्ड में तुलसीदास जी के इस कथन कि, सकल सौचकरि राम नहावा, सुचि सुजान बट छीर मंगावा, अनुज सहित सिर जटा बनाये,...से सिद्ध है कि उस समय आपत्ति (संकट) काल में भी केश कटवाने पाप समझा जाता था जो श्री रामचन्द्र और लक्षमन जी ने बनवास समय भी जटा बनानी ही प्रवान की परन्तु केश नो कटवाय।

उत्तरः—उस समय श्री रामचन्द्र जी बनवास जा रहे थे बनबास के लिये जटा ही धार्ण करनी उचित थी, क्योंकि कैकई ने कहा था कि, तापस बेष बसेषि उदासी। चौदह वरिस रामु बनवासी, भाव तपस्वी बेष विशेष उदासियों का हो क्योंकि उदासी भेष में भी जो निर्बाण साधू होते हैं उन्हों की जटा ही होती हैं। नहीं तो यहां पर प्रश्न हो सकता है कि बट का दूध मंगवा कर तत्काल जटा त्यार करने का क्या कारण था स्वयं धीरे धीरे बन में सफाई न करने से जटा बन सकती थी। शेष जटा न भी बनाते तो केवल

केश ही रहने देते तो क्या आपत्ति अधिक हो सकती थी जिस लिये आपत्ति (संकट) काल में भी केश न मुन्डवाए और जटा ही बनाई कह रहे हैं।

यदि कहा जाय कि आपत्ति काल में केशों की सफाई के लिये कंघा आदिक साधन बन में नहीं मिल सकते थे इसलिये जटा ही बना ली गई। तो ऐसे फिर आपत्ति काल (बन) में नाई कैसे प्राप्त हो सकते थे जो चौदह वर्ष के लिये केश मुन्डन के प्रोग्राम को भी साथ लेते जब एक चारि पैसे का कंघा आदि मिलना कठन कह रहें हैं तो नाई कैसे बन में सुखैन मिल सकते थे। अतः यहां पर यह युक्ति काम नहीं देती कि आपत्ति काल में सफाई के लिये कङ्घा आदि साधन नही प्राप्त हो सकते थे। इस लिये तत्काल जटा ही बना लीं और केश नहीं कटवाय तथा यदि इसी बात पर आग्रह किया जाए कि उस समय आपत्ति काल में भी केश कटवाने पाप ही सभझा जाता था तो इसी तुलसी रामायण के उत्तर काण्ड में ही देखो श्रीं रामचन्द्र जी ने अयोध्या आकर (अपनी जटा विसर्जित की) टीका ज्वाला प्रसाद मिश्र यथा, पुनि निज जटा राम बिबराये। गुरु अनुसासन मांगि

नहाये, यहां पर यह शंका होती है कि बिना मुन्डन किये केवल जटा खोल देने से ही जटा समाप्त हो सकती हैं, तो देखो सब से पहली मूल बाल्मीकि रामायण, टीका ज्वाला प्रसाद मिश्र सहित, के युद्ध काण्ड सर्ग १३० में श्लोक १३ से १५ तक यथा: अनन्तर शत्रुघ्न जी की आज्ञा से बड़े निपुण सुख स्पर्श हाथ वाले और शीघर कारी नाई प्रणाम करके श्री रामचन्द्र जी के निकट उपस्थित हुए ।१३। पहले उन नाइयों ने भरत जी को महा बलवान् लक्षमण जी को वानरों में इंद्र सुग्रीब व राक्षसो में श्रेष्ट विभीषण को स्नान कराया ।१४। तिसके पीछे रामचन्द्र जी शिर की जटा अलग कराय स्नान कर चित्र विचित्र माला उबटन लगाय मूल्यवान् वस्त्रों से सुशोभित हो अपने शरीर की शोभा से चारों ओर प्रकाश करने लगे। श्रीमान जी आपको पता होना चाहिये कि नाई आकर जटा को अलग कैसे किया करते हैं यहां पर नाई से जटा अलग कराई लिखी हैं यदि आपकी दलील को ही सत्य मान लें कि उस समय केश कटवाने पाप समझा जाता था जिस लिये श्री रामचन्द्र जी ने जटा बना ली; तो वापस अयोध्या आकर नाई को बुला कर

वहि जटा क्यों मुन्डवा दी क्या फिर केश कटवाने का पाप कोई न था तथा बनवास में तो आपत्ति काल था तो अयोध्या में राज तिल्क के समय कौन सी बनवास से भी अधिक आपत्ति थी जिस लिये केश कटवाने पाप न समझा गया अतः यह आप की युक्ति कुछ भी वज़न नहीं रखती। किन्तु सत्य यह है कि चौदह वर्ष तक, तापस वेष वशेष उदासी, की जो आज्ञा थी वह पूर्ण होने पश्चात श्री रामचन्द्र जी ने वह जटा मुन्डवा दी और यदि उस समय केश कटवाने पाप समझा जाता था तो गुरु विशिष्ट जीने ही पहले बाल्यवस्था में श्री रामचन्द्र आदि भाईयों का मुन्डन कराया लिखा है यथाः चूड़ा करन कीह्न गुरु जाई, बिप्र बहुत दछिना पाई (बाल कांड दोहा नः २३२ से आगे तुलसी रामायण) गुरु जाकर चूड़ा करण किये और ब्रह्मणों ने बहुत सी दक्षणा पाई (यथार्थ में मुन्डन किया कारन कि यह वैदिक संसकार है जो कि ग़र्भ से पहले वा तीसरे वर्ष में होता है उससे वीर्य दोष जाता रहता है) टींका ज्वाला प्रसाद मिश्र।

शेष श्री रामचन्द्र जी वेद आदि को वाणी को मानने वाले थे जिस वेद में भी मुन्डन करवाने की

आज्ञा मिलती है तो श्री रामचन्द्र जी केशों का मुन्डन करना कैसे पाप समझ सकते थे।

यथा: अथर्व वेद काण्ड ६ सूक्त ६८ आयम गन्त सविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि। आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतस: सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतस: ।१। अदिति: श्मश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा। चिकित्सतु प्रजा पति दीर्घायुत्वाय चक्षसे।२। येना वपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्मणो वपते दमस्य गोमान, श्ववान यमस्तु प्रजावान् ।३।

इन्हों मन्त्रों के भाष्य, सायण जी अथवा आज कल के किये खेमकरनदास त्रिवेदी तथा जयदेव शर्मा आदिकों ने चाहे भिन्न भिन्न रीती से किये प्रतीत होते हैं परन्तु मुन्डन करना रूप सिद्धांत सब ने ही लिखा है भाव मुन्डन करने का इन्कार किसी ने भी नहीं किया, इनकार हो भी कैसे सकता है क्योंकि इन मंत्रों में क्षुरेण समश्रु, वपत आदि पद स्पष्ट पड़े हैं।

(१८) प्रश्न:—परसराम पर क्रुद्धित होकर श्री रामचन्द्र जी से लक्षमण जी ने यह आज्ञा मांगी

कि, कहोबांध डारों कहो देश ते निकारों कहो वारिध उत्तारों कहो जूरा काट लीजिए।

उत्तरः— यह कबित कवी हृदयराम कृत हनुमान नाटक में हैं किन्तु पूर्वोक्त आपकी मानी हुई तुलसी रामायण के यह अनुकूल नही क्योंकि तुलसी रामायण बाल कांड में लक्षमण परसराम सम्वाद में लक्षमण जी ने परसराम को कहा है कि, सुर महिसुर हरिजन अरु गाई, हमरे कुल इन्ह पर न सुराई, बधे पाप अपकीरति हारे। मारत हूं पा परिय तुम्हारे, क्योंकि पूर्वोक्त लक्षमण जी जब (महिसुर) ब्रह्मण पर भी अपनी कुल में सूराई=वीरता नही दिखाई जाती कहे रहे हैं बल्कि तुम मारो तो भी आपके पैरों में ही पड़ना चाहिये कहते हैं, तो वहां पर परसराम ब्रह्मण को, कहो बांध डारों, आदिक कैसे कहते हैं और यदि, कहो बांध डारों, आदि कथन को सत्य भी माना जाय तो यहां पर जूड़ा काट देना भी एक प्रकार का उसका अपमान करना ही अर्थ है। जैसे किसी की कोई पगड़ी (दसतार) सिर से भरी सभा में दो थप्पड़ लगा कर उत्तार दे तो वह पुरुष अपना बहुत अपमान हुआ समझता है परन्तु इसका यह भाव नही कि उस

पुरुष ने अपनी पगड़ी अपने घर में भी कभी नही सिर से उत्तारी किन्तु वह पुरुष प्रतिदिन अपनी पगड़ी उत्तारता भी है परन्तु अपमान नही समझता और बलपूर्वक ही पगड़ी उत्तारी जाने को अपना अपमान समझता है। तैसे ही वहां बलपूर्वक जूड़ा काट देना परस राम जी के अपमान का सूचक है, और आप वह जब चाहें जूड़ा केश कटवा सकते थे, किन्तु अपना कोई अपमान नही समझ सकते।

शेष परसराम जो तपस्वी निर्वाण वेष में थे इसलिये उनकी जटा का जूड़ा था वह जूड़ा काट डारों कहने से उसके तपस्वी वेष का अपमान करके उसके अभिमान की निवृति में तात्पर्य था अतः इस बात से अपने आप अपनी इच्छा से केश कटवाने पाप सिद्ध नही हो सकते। और ऐसे किसी से कोई भी बल पूर्वक क्रिया करवाई जाए वहि ही उसका अपमान या दण्ड रूप हो जाती है। जैसे आज कोई केश रहित मनुष्य कारागार (जेल) में जावे तो वहां उनके केश बढ़ जाएँ तो वह वहां केशों के बढ़ने को भी दण्ड ही मिला समझने लग जाता है तो क्या अपनीं रुचि

अनुसार केशों के बढ़ाने को भी कोई अपमान या दण्ड मिला समझता हैं ?

तथा पूर्वोक्त कवित में केवल जूड़ा काटना ही नहीं लिखा साथ यह भी लिखा है कि । कहो देश ते निकारों कहो वारिध उतारों, भाव कहो तो देश से निकाल दूं और कहो तो समुद्र से पार करदूं । तो ऐसे फिर देश से कहीं विदेश जाना भी और समुद्र से पार जाना भी पाप या दण्ड रूप ही सिद्ध होगा । यदि ऐसा ही हो तो जो लोग आज अपनी रुची से विदेश या समुद्र से पार जाते हैं क्या वह भी पापी या दण्डी ही समझे जाते हैं। यदि नहीं तो तैसे जूड़ा काट लीजिए, से भी किसी मनुष्य को अपनी रुची से केश कटवा देने से कोई पापी या दण्डी नहीं समझा जा सकता।

(१६) प्रश्नः—अश्वत्थामा का सिर काटने का दण्ड देने की जगह उसके केश काट कर उनको छोड़ देना पुनः रुकमि का सिर काटने के समय रुकमणि की प्रार्थना मान कर श्री कृष्ण जी ने केवल रुकमि के केश काट कर प्रण पुर्ण कर लेना आदि प्रसंगों द्वारा प्रकट होता है कि उस समय ब्रह्मणों और

क्षत्रियों के केश काटने सिर काटने के समान दण्ड था।

उत्तरः—अश्वत्थामां के केवल केश ही नहीं काटे किन्तु तलवार की नोक से फाड़कर एक मणि भी उसके सिर में से निकाली थी देखो श्री मद्भागवद् सकन्ध १ अध्याय ७ श्लोंक ५५ यदि केवल केश काटने ही सिर काटने के समान दण्ड होता था तो फिर सीस फाड़ कर बीच से मणि क्यों निकाली गई। क्योंकि जब केश काट कर सीस काटने के समान (मृत्यू) दण्ड दे दिया तो फिर सीस फाड़ कर मणि किस दण्ड देने के लिये निकाली गई। क्या मृत्यू से परे भी कोई और दण्ड शेष रहता था अतः इन प्रसङ्गों से यह भाव नहीं लिया जा सकता कि उस समय केश मुन्डवाने सिर काटने के समान दण्ड था यदि ऐसे ही होता तो वेद में मुन्डन संस्कार लिखा हूआा है उसके अनुसार सब ही वैदिक धर्मी मुण्डन कराते थे। परन्तु जिस स्वांग में कोई पुरुष रहता है उस स्वांग को बल पूर्वक नष्ट कर देना ही दण्ड मांना जाता है। तैसे रुकमि के भी केश काटने का यहां यह भाव नहीं कि केवल केश काट देने मात्र

से ही मृत्यू दण्ड पुर्ण हो गया यदि ऐसे ही हो तो जब केश काटने मात्र से मृत्यू दण्ड पूर्ण हो सकता था तो फिर रुकमि को श्री कृष्ण जी ने बाँधकर अधमरी अवस्थो में क्यों किया हूया था, देखो श्रीमद्भागवद् सकन्ध १० अध्याय ५४ श्लोक ३६ कि रुकमि दुपट्टे से बन्धा हूआ अधमरी अवस्था में पड़ा हूया है उसे देखकर बलराम जी को बड़ी दया आई (टीका हनूमान प्रसाद पोदार गीता प्रेस) तथः सुखसागर काशी वासी बाबू मक्खन लाल पंजाबी खत्री ने हिन्दी भाषा में अनुवाद किया में लिखा हैं कि शिर के बाल मूड कर सात चोटी रखने उपरांत उसे अपने रथ में बांध लिया। तो जब केश मून्डने से मुत्यू दन्ड दे दिया गया तो फिर उसको रथ में और कौन दण्ड देने के लिये बाँध लिया, अतः यहां असल भाव यह है कि जिस शारीरक वेष भूषा (भाव स्वरूप) में वह आगें रहता था उस स्वरूप से उसको करूप कर देना ही दण्ड था। यदि कभी आग्रह ही किया जाय तो रुकमि यदि केश रहित होता भाव उसके सिर पर यदि केश न होते पहिले ही मुन्डित होता तो फिर श्री कृष्ण जी उसको जीवत रखते हूये मृत्यू दण्ड कैसे देते फिर तो

यही दण्ड हो सकता था कि उसको मुन्डन ही न करने देते, इसलिये बलपूर्वक किसी को कुछ भी कर दिया जाए वहि उसको दण्ड रुप हो जाता है और स्वेच्छा से चाहे कोई कुछ करे वह दण्ड रूप नहीं होता। जैसे किसी मनुष्य को कोई जबरदस्ती चार घण्टा एक ही जगह बैठा रक्खे या उसको बैठने ही न देवे चलता ही करी रक्खे तो वह पुरुष न्यायालय में जाकर यहि कहेगा कि इसने मेरे को बलपूर्वक एक ही जगह चार घण्टे बैठा करके दण्ड दिया है। या चलता करी रक्खा है किन्तु अपनी इच्छा अनुसार वह मनुष्य चाहे दस घण्टे तक एक जगह पर बैठा रहे या चलता फिरता रहे परन्तु वह कुछ दण्ड नहीं समझता।

तथाः—आप से ही कोई बलपूर्वक दस रुपये छीन ले तो आप इसको दण्ड ही समझोगे यदि वहि दस रुपये आप किसी को पुरस्कार दे दें तो चित में प्रसन्नता होगी तैसे बलपूर्वक किसी से कोई केश रखावे या कटवावे अथवा किसी को कोई देश से निकाल देवे तो वह दण्ड ही समझा जाता है परन्तु अपनी रुची से कोई किसी से केश मुन्डन करवावे या

धार्ण करे अथवा विदेशों में जावे तो वह दण्ड रूप नहीं समझे जाते । बल्कि प्रसन्नता होती है अतः प्रसंगो के भाव अशुद्ध नहीं निकालने चाहिऐ ।

(२०) प्रश्नः—कई पुस्तकों में तो यहां तक लिखा है कि जङ्ग युद्ध में भी शत्रू को केशों से पकड़ना या केशों की निरादरी करनी महा पाप अरु कायरता थी जैसा कि महाभारत के द्रोण पर्व में सोम दत्त के पुत्र भूरि श्रवा श्रोर सात्यकि के युद्ध से सिद्ध होता है,

उत्तरः— हम को आज तक किसी ऐसी पुस्तक के दर्शन नहीं हूए जिसमें ऐसे लिखा हो प्ररन्तु जिस महाभारत के द्रोण पर्व का आप उपर प्रसंग कहे रहे हैं। उस द्रोण पर्व में भूरि श्रवा और सात्यकि के युद्ध में कोई ऐसा शब्द नहीं जिसका भाव यह हो कि केशों को पकड़ना या अपमान करना महा पाप या कायरता है बल्कि भूरि श्रवा ने सात्यकि की छाती पर लात मारी और उसके केशों को पकड़ मयान से तलवार खेंच ली (अध्याय १४२ श्लोक ६०) में लिखा है, शेष केशों से पकड़कर मारना इसलिये शायद् कायरता मानी जाती हो कि केशों से पकड़ा

हूआ पुरुष मजबूर होकर मार खाता है, साधन हीन को जैसे मारना कायरता है तैसे केशो से पकड़ा हूआ पुरुष साधन हीन सा ही हो जाता है किन्तु केवल केशों से पकड़ना या निरादरी मात्र करने से कोई पाप या कायरता सिद्ध नहीं होती। क्योंकि केश धारी बच्चों के केश अड़ जाते हैं तो माता पिता केशों को पकड़ करके कंघे के साथ खैंच खैंच करके छुड़ाते हैं तब केशों का अपमान होता है या जो पुरुष श्रमिक (मेहनत करने वाले) मजदूर केशधारी है वह सिर के ऊपर ऊंच नीच सब ही बोझ उठाते हैं तो केशों का अप-मान (निरादरी) अवश्य होती है तो कोई कायरता या पाप नहीं समझा जाता।

(२१) प्रश्नः—जब से बुद्ध भिक्षुओं ने संसार से घृणा करके घर बार त्याग कर जङ्गलों में निवास किया तो साथ ही केशों को भी सुन्दरता का निशान समझकर करुप होने के लिये सिर मूंह मुन्डवा छोड़ा उसके पश्चात शंकराचार्य की चलाई गई मुन्डन रीति के अनुसार सन्यासी भी कोन मोन करवा बैठे,

उत्तरः—संसार से घृणाकरनी कोई अनुचित नहीं

थी क्योंकि प्रत्येक धर्म ग्रन्थों और गुरु वाणियों में संसार को मिथ्या और झूठ करके लिखा है यांते झूठ मिथ्या से घृणा करनो कोई बुरी बात नहीं थी शेष उन्हों ने जब जङ्गलों में निवास किया तो जंगलों में नाई के न मिलने से विपरीत इसके उन्हों ने केश धारण करने थे न कि मुन्डवाने थे यदि कहा जाए कि करूप होने के लिये मुन्डवाए थे तो कंघा तेल साबन आदिक से न धोने और न साफ करने, से स्वयं ही सुन्दरता नहीं थी रह सकती, तो भी फिर मुन्डवाने की आवश्कता नहीं थी तथा करुप होने के लिये अन्य भी कई तरीके हो सकते थे अतः यह दलील उन्हों के केश मुन्डवाने सिद्ध करने के लिये कुछ सन्तोष नहीं देती, और मुन्डन की रीति यदि श्री शंकराचार्य जी ने चलाई मानी जाए तो उन्हों से पहले वेद में मुन्डन संस्कार है उसका उत्तर कौन देगा इसलिये यह दलीलें बेसुरी हैं, भाव निरर्थक हैं।

(२२) प्रश्नः—नन्द राजा ने ब्रह्मणों का तेज प्रताप और ऐश्वर्य घटाने के लिये उन्हों के केश जबरदस्ती मुन्डवा दिये तब से ही उस समय के अग्रणियों ने सब ही को आपने जैसा हीं बनाने के लिये

धर्म पुस्तकों में मन घड़न्त श्लोकों की मिलावट कर के मुन्डन संस्कार सिद्ध किया और दूसरों को भी मुन्डन कराने की आज्ञा दी ।

उत्तर:—किसी प्रमाणिक पुस्तक में हमने यह कहीं नहीं पढ़ा कि नन्दराजा ने तेज घटाने के लिये बलपूर्वक केश मुन्डवा दिये थे, शेष यह बात अनुभव (तजुर्बे) से भी खाली है क्योंकि यदि केश ही तेज, प्रताप औंर ऐशवर्य का कारन होते तो आज केश धारी लोगों से बिना किसीं मनुष्य का भी तेज प्रताप और ऐशवर्य=विभूति नहीं होनी चाहिये थी परन्तु हम देखते हैं कि बड़े बड़े सेठ विभूति वाले हैं पर केश धारी नहीं हैं और महात्मा गांधी तथा श्री जवाहर लाल नेहरू जिन्हों का तेज प्रताप सब ही संसार में प्रसिद्ध हैं वह भी केश धारी नहीं हैं अतः पूर्वोक्त दलील केवल मनोक्त ही घड़ी गई भास्ती हैं यदि कभी आग्रह ही किया जाय तो भी ब्रह्मणों का तेज घटाने के लिये जब राजा ने उन्हों के केश कटवाय तो फिर केश रखने भी ब्रह्मणों के लिये ही जरूरी साबत हुये और शेष किसी जाति या वर्ण और आश्रमों के पुरुषों के लिये नहीं ।

शेष यदि कहा जावे कि नन्दराजा की ब्रह्मणों के केश कटवाने वाली बात, सूर्य प्रकाश आदि ग्रन्थ में से मिलती है तो सूर्य प्रकाश, के कर्त्ता ने स्वयं केश धारी होने के कारन आपने पक्ष पुष्टी के लिये मुन्डन संस्कार के विरुद्ध यह मिलावट ही की गई मानी जा सकती है और सिख पन्थ में भी सूर्य प्रकाश की वाणी को सन्देह रहित नहीं माना जाता: इसलिये यहां किसी दसों गुरु सहबों की मुख वाक्य वाणी के प्रमाण की आवश्यकता है। जो नहीं मिल सकता: बल्कि श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी की वाणी में से इसके विपरीत प्रमाण मिलता है यथा: देश फिरिओ कर भेस तपो धन केस धरे न मिले हरि पिआरे (अकाल उस्तति) तथा: भाई गुरदास जी की वार २५ पौड़ी १२ में ऊंचे अंगों को अभिमान का फल बताते हुये लिखा है कि, सिर उच्चा अभिमान विच कालख भरिआ काले वाला...... लोइण काले जाणिअन दाड़ी मुच्छां कर मूंह काला। यदि केश तेज और ऐश्वर्य का कारन होते तो भाई गुरदास जी, कालख भरिआ काले वाला तथा दाड़ी मुच्छां कर मूंह काला। आदि वाक्य कभी न लिखते, शेष रही धर्म पुस्तकों में मन

घड़न्त श्लोकों की मिलावट वाली बात तो यह कैसे निश्चय किया जाए जब तक कोई पक्का सबूत न मिले या तो कोई ऐसी अथर्व वेद की पुस्तक मिले जिस में मुन्डन संस्कार के मंत्र ही न हों, तो फिर यह कहा जा सके कि जिस अथर्व वेद में मुन्डन संस्कार के मंत्र हैं वह मिलावट है जब तक कोई ऐसा सबूत नही मिलता तो केवल अपने पक्ष पुष्टि के लिये कल्पना कर लेनी कि यह बात पीछे से की गई मिलावट है तो ऐसे कौन से ग्रन्थ के ऊपर यह कल्पना नहीं हो सकती यदि हरेक पुस्तक के ऊपर यह कल्पना हो सकती है तो कौन से ग्रन्थ में से कोई सिद्धाँत सिद्ध किया जा सकेगा कारन यह कि जिस-सिद्धांत को जो ना मानने वाला होगा वह वहां ही यह कल्पना कर देगा कि यह पीछे से किसी की और से की गई मिलावट है। तो फिर इसका उत्तर क्या हो सकता है अतः यह मिलावट वाला उत्तर यहां बिना टाल मटोल करने अर्थात बिना पीछा छुड़ाने के और कुछ अर्थ नहीं रखताः और यहां यह प्रश्नः भी हो सकता हैं कि बुद्ध भिक्षू और श्री शंकराचार्य जी नन्दराजा से पहले हुये हैं कि पीछे, यदि पहले हुये हैं

तो बुद्ध भिक्षूयों और शंकराचार्य की रीति मुन्डन करने की जब चल चुकी होगी तो फिर नन्दराजा ने ब्राह्मणों के केश कटवाकर उन्हों का तेज प्रताप नष्ट किया यह नहीं बन सकता। क्योंकि जब उन्हों के मुकाबले पर बुद्ध भिक्षू और श्री शंकराचार्य जी जो केश रहित (मुन्डन किये हुये) हैं वह लोगों के गुरु हैं तो केवल ब्राह्मणों का तेज ही कैसे कम हो सकता था कारन यह कि गुरु का पद, तेज और प्रताप से रहित नहीं हो सकता और यदि कहा जाय कि बुद्ध भिक्षू और श्री शंकराचार्य जीं नन्दराजे से पीछे हुये हैं तो पहले जब नन्दराजा ने ब्राह्मणों का मुन्डन करवा डाला था और मन घड़न्त श्लोकों की भी धर्म ग्रन्थों में मिलावट होने से मुन्डन संस्कार भी प्रचलित हो चुका था तो फिर बुद्ध भिक्षूयों और श्री शंकरार्य जी ने मुन्डन की रीति क्या चलाई क्योंकि मुन्डन की रीति आगे ही ब्राह्मणों के मुन्डन होने से प्रचलित हो चुकी थी अतः यह ऊपर कही गई बेसुरी ही दलीलें हैं भाव इनमें कुछ महत्व नही हैं, और सच्चाई से दूर हैं।

(२३) 'प्रश्नः—इसका असर यह पड़ा कि किसी ने

वाल खिसखासी कराए और किसी ने पटे रख लिये किसी ने मतीरे तरबूज़की लाही टाकी जैसा निशान सिर में रख लिया और किसी ने रेल की पटड़ी जैसी तोड़ सिधी लकीर किसी ने आधी और किसी ने कद्दू की डण्डी की तरह चोटी मात्र केशों की निशानी रख के बाकी के केश कटवा दिये, समय बदला इस कुरीति के चलते प्रवाह को रोकने के लिये श्री गुरुनानक देव जी ने आप साबत सूरत रह कर लोगों कों भी साबत सूरत दसतार सिरा···आदि उपदेश देने का प्रयत्न करके·········

उत्तरः—वाल (केश) खिस खासी कराने या पटे रखने आदि यह मनुष्यों की अपनी अपनी रुची के अधीन होते हैं जैसे बस्त्रों का पहरावा अलग अलग तरीके का सर्व लोगों कों पसन्द होता है।

शेष मतीरे (हदवाणे) की लाही टाकी जैसे निशान आदि यह टिचकरें हैं, इसी किसम की टिच-करें केशधारी लोगों के ऊपर भी अनन्त हो सकती हैं कोई कमी नहीं प्ररन्तु हम लिखना नहीं चाहते क्यों-कि यह सभ्यता के विरुद्ध है।

और यहां प्रश्न हो सकता है कि: श्री गुरुनानक

देव जी आप केश धारी थे यहां पता: कैसे मिला: यदि कहा जाए कि उन्हों के फोटो (मूर्ति) के दर्शन करने से पता मिलता है तो यह पीछे बता चुके है कि मूर्ति (फोटो) बनाने वाले अपनी अपनी मन की रुची के अनुसार ही बनाते हैं, यदि यहि उन्हों के केश धारी होने का सबूत है तो मैं सिन्ध में गया था वहां एक जगह श्री गुरु नानक देव जी की मूर्ति के हमने दर्शन किये तो उस मूर्ति के सिर पर केश नही थे और दाढ़ी भी छोटी सी थी भाव कतरी हूई प्रतीत होती थी शेष रहा, साबत सूरत दसतार सिरा यह शब्द श्री गुरु नानक देव जी का उच्चारण किया हूआ नहीं किन्तु यह शब्द, मारु महले पांचवें का है इसलिये इस शब्द में श्री गुरु नानक देव जी ने उपदेश किया सिद्ध नहीं होता किन्तु पांचवें गुरु जी ने उपदेश किया है। वह भी हिन्दू या सिक्खों को नहीं किया बल्कि मुसलमानों को उपदेश किया है यथा: बद अमल छोड़ करहु हथ कूज़ा। खुदाय एक बुझि देवहु बागाँ बगूँ बरखुर दार खरा, अतः हिन्दु या सिख हाथ में कूजा— अस्तावा नहीं रखते थे और नां हीं बांगाँ आदि देते थे इस लिये हिन्दु और सिक्खों के लिए यह उपदेश

समझना अज्ञान है। यदि कहा जाए कि मुसलमानों को केश धारण करने का इस में हूकम दिया है तो इसमें केश रखने के लिये उपदेश करने वाला कोई पद ही नहीं क्योंकि यह सब ही पाठ ऐसा है यथा: नापाक पाककर हदूर हदीसा साबत सूर्त दसतार सिरा, भाव नापाक मन को पाक करना ही यह खुदा के हजूर पहुं-चान वाली हदीस है और जो मन की (सूर्त) सुर्ति = वृति खुदा के साथ (साबत) पुर्ण रूपसे स्थापित रखनी है यहि ही (दस्तार) पगड़ी है (सिरा) श्रोमणि अथवा सिर की: इसलिये इसमें मुसलमानों को भी केश धारी होने के लिये कोई उपदेश नहीं।

यदि कोई हठ (आग्रह) ही करो तो भी मुसलमानों को केशधारी होकर रहने का उपदेश होने से जो शेष मुसलमान नहीं हैं उनके ऊपर यह हुकम (आज्ञा) लागू नहीं हो सकता इसलिये भी सर्व व्यक्ति मात्र के लिये केश रखने जरूरी सिद्ध नहीं होते। और यदि कोई इस का और भी अर्थ किया जाय तो भी यह अर्थ तो अवश्य होगा कि साबत सूर्त रहने रुपी दस्तार (पगड़ी) करो तो फिर कपड़े की सिर पर पगड़ी का बाँधना निषेध अर्थ होगा, किन्तु नग्न सिर

रहना सिकखों के विरुद्ध अर्थ है क्योंकि सिक्खों के लिये, रहत नामिआं का सार, पुस्तक के अंक (२१) में लिखा है कि, नङ्गी केसी न खाए न बाज़ार फिरे न सोए।

(२४) प्रश्नः—दसमें जामें में अमृत छकाने (पिलाने) के समय केशों को धार्मिक रहतों में शुमार करके केश कटाने भारी पाप सिद्ध करके अमृत धारी सिंघों को, साबत सूरत रहने का और बाकी के सहज धारियों को सिंघ सजा के अमृत छकने का उपदेश दिया यथाः जेतक हुते हज़ूर मह सिर पर धर कर केस, पहुल लै सिंघ नाम धर पहर काछ सुभ बेस, श्री सतगुर की संगत जंहि जहिं, लिखे हुकम नामें गुर तहिं तहिं, केस धार सिर पर सिख आवें, होहि सिख ना भदन करावें, गुरप्रताप सूर्य रुत्त ३।

उत्तरः—श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने यदि अपनी संस्था—सिक्खों के लिये केश रखने धार्मिक उन्नती का साधन लिखे हैं तो इसके साथ हमारा कोई विरोध नहीं बल्कि सिक्खों को केश रखने मुबारक हों यह अति प्रसन्नता की बात है। परन्तु जो श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के सिक्ख नहीं हैं

उन लोगों के लिये इस प्रमाण द्वारा केश रखने आवश्यक हैं यह सिद्ध नहीं किये जा सकते। क्योंकि यह पीछे भी बता दिया गया है कि किसी एक संस्था का चालू किया हुआ नियम सब संसार की संस्थाओं और मनुष्यों के ऊपर लागू नहीं किया जा सकता।

शेष उक्त प्रमाण में केश कटाने भारी पाप हैं यह शब्द कोई नहीं और जो सहज धारी सिक्ख हैं वह केश रहत ही हो सकते हैं, क्योंकि किसी केशधारी को सिक्ख पन्थ में सहज धारी सिक्ख नहीं कहा जाता किन्तु केश धारी को केश धारी सिक्ख ही कहा जाता है, इसलिये श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने यदि यह हुकम नामें लिखें हैं कि (होंहि सिक्ख ना भधन करावें तो सिद्ध हुआ कि दस्मेश जी (दस्म गुरु जी) का सहज धारी (केशरहत) कोई सिक्ख नही हो सकता और ना ही कोई पीछे हुआ है।

परन्तु यह बात इतिहास के उल्ट (विपरीत) है क्योंकि इतिहास में बाबा रामकुयर आदि कई श्री दस्मेश जी के सहज धारी सिक्ख थे मिलते हैं और यदि सहजधारी भी गुरु जी का सिक्ख हो सकता है और श्री गुरु जी से सद्‌गति ले सकता है तो फिर केश

रखने श्री दस्मेश जी के सिक्खों के लिये भी आवश्यक नहीं रह जाते और नां हीं कोई धार्मिक उन्नति का साधन या चिह्न ही स्थापित रह सकते हैं क्योंकि जब सहज धारी सच्ची प्रेम भक्ति करके श्री दश्मेंश जी का सिक्ख हो सकता और सद्गति भी श्री गुरु जी से ले सकता है तो फिर उसको और चाहिये भी क्या जिस लिये वह केश धारी होने का प्रयत्न करेगा।

तथा उक्त प्रमाण गुर प्रताप सूर्य का है श्री दस्मेश जी की *श्री मुखवाक बाणी का नहीं। सिक्ख पन्थ में केवल गुर प्रताप सूर्य के प्रमाण को ही प्रमाणिक नहीं माना जाता कि जब तक श्री मुखवाक बाणी का प्रमाण साथ न दिया जाए।

क्योंकि गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थावली के मुख्य बन्ध पृष्ट ३२ पर इसके कर्त्ता श्री मान्य भाई साहब भाई वीरसिंह जी ने लिखा है कि सिक्ख धर्म में केवल इतिहास इसका मूल या इसकी टेक नहीं। इसकी

---

* श्री गुरु जी के अपने मुखार विन्द से जो उच्चार्ण की हुई बाणी हो उसको सिक्ख मत में श्री मुखवाक बाणी कहा जाता है।

मूल टेक सत्गुरों की बाणी और हुकम है, अतः गुर प्रताप सूर्य, इतिहासक ग्रंथ है श्री मुख वाक बाणी नहीं। इसलिये श्री मुखवाक बाणी के प्रमाण से बिना केवल गुरु प्रताप सूर्य का प्रमाण कोई वज़न नहीं रखता यदि कहा जाय कि बीच में लिखा है कि गुरू जी ने हुकम नामें लिखे तो श्री दस्मेश जी की श्री मुख वाक बाणी में इस जैसे कोई हुकम नामें (आज्ञा पत्र) नहीं हैं और आज कल जो हुकम नामें लोगों ने अलग छापे हूये हैं इन्हों को आज तक किसी ज्ञानी विद्वान ने नहीं माना कि यह श्री मुख वाक बाणी है।

तथा:— यदि कोई आग्रह किया जाय तो ऐसे जैसे हूकम नामें भी मिलते हैं जो सिक्खो के भी विरुद्ध हैं, जैसे श्री मान्यपण्डित तारासिंह नरोत्म के लिखे हूये श्री गुर तीर्थ संग्रह, पुस्तक प्रकाशक भाई बूटासिंह प्रतापसिंह बाज़र माई सेवा अमृतसर देवीदास पृटिंग प्रेस अमृतसर में भाई सुन्दरसिंह मैनेजर के प्रयतन से छपे के पृष्ट १०१ पर लिखा है कि पटने सहिब में यथा: एक सौ आठ हूकम नामों की पोथी जिसमें एक हुकम नामे में कई हुक्के मंगवाए लिखे हैं·········इसलिये इन्हों हुकम नामों का कोई नियम नहीं, अतः प्रमा-

रिणाक भी नहीं यदि कहा जाय कि पूर्वोक्त पण्डित नरोत्म जी ने आगे लिखा है कि हुक्कों वाला हुकम नामां श्री गंगा जी के प्रवाह में पहुंच जाना चाहिये तो एसे जो सहज धारी सिख होंगे वह कह देंगे जो केश रखने वाला हुकम नामा है वह गंगा में पहुंच जाना चाहिये तो फिर सिद्ध क्या हूआ (धूम्र पान करने के लिये यंत्र को हुक्का कहते हैं।) तथा यदि गहरी विचार की जाय तो नौं गुरु सहिबों ने जब केशों को धार्मिक रहतों में शुमार सम्मिलित नहीं किंया तो श्री दस्मेश जी उन्हों के विपरीत यह कैसे कर सकते थे। यदि कहा जाए कि पहिले नौं गुरु सहिबों ने भी केश धार्मिक रहतों में शुमार किये थे तो उक्त प्रश्न में लिखा है कि दसमें जामें में अमृत छकाने समय केशों को धार्मिक रहतों में शुमार करके ....उपदेश दिया, तो फिर यह व्यर्थ सिद्ध हो जाता है, क्योंकि अमृत छकाने (पिलाने) के समय केशों को धार्मिक रहतों में शुमार करना तब ठीक हो सकता है यदि केश पहले धार्मिक रहतों में शुमार ना हों। यदि पहले ही हों तो फिर दसमें जामें में क्या करना था।

(२५) प्रश्न: एक तर्फ केश धारी सिंघों और सहज धारी सिक्खों तथा हिन्दू सज्जनों के आगे ऊपर साबत किये अनुसार पूर्वोक्त साबत सूर्त रहने वाले प्राचीन महान पुरुषों भाव राम चन्द्र कृष्ण महाराज आदकों के सबूत और दसों पातशाहों के उपदेश हैं परन्तु दूसरी तर्फ तर्क वादियों कीओर से निम्नलिखित बातों पर जोर दिया जाता है। सिक्ख सिर पर केश क्यों रखते हैं केश सिर पर बोझ है·········

उत्तर:— तर्क वादी लोग हरेक बात पर तरकें करते ही रहते है वह मुन्डन कराने वालों पर भी करते रहते हैं यदि सिक्ख केश धार्ण करते हैं तो अपनी रुची से धार्ण करते हैं परन्तु तर्क वादी के सिर पर तो कोई बोझ नहीं। शेष कथित प्राचीन महां पुरुषों श्री राम चन्द्र और कृष्ण भगवान आदि कों के केश रखने बाबत कोई सबूत प्रमाण नहीं लिखे। केवल इतना लिख देना मात्र ही कोई सबूत नहीं होता कि श्री राम चन्द्र और कृष्ण आदि सर्व केश धारी थे क्योंकि ऐसें तो कोई यह लिख देगा कि वह सबही केश रहित थे अत: जब तक उन्हों के मुखार्विन्द से निकला हूआ वाक्य प्रमाण नहीं

मिलता कि मनुष्य की सद्गति केंशों के बिना नहीं हो सकती तब तक राम कृष्ण आदिकों के केश रखने बाबत सबूत हैं यह कहना व्यर्थ है और दसों पातशाहों के जो ऊपर केश रखने के लिये साबूत लिखे हैं उन्हों में से एक श्री मुखवाक है । साबत सूर्त दस्तार सिरा, इसका अर्थ यदि न्याय की दृष्टि से किया जाय तो बीच केश और केश रखने का नाम मात्र भी कथन नहीं और दूसरा सबूत श्री मुखवाक नहीं यह कवि की रचना है इसका विचार ऊपर किया गया है ऊपर देखो, यह आम मनुष्यों के लिये केश रखने सिद्ध नहीं करता क्योंकि श्री गुरु गोविन्दसिंह ज़ी महाराज सच्ची श्रद्धा भक्ति देख कर केशधारण किये बिना भी सद्गति कर सकते हैं, यदि यहां नियम किया जाय कि नहीं कर सकते तो फिर पहले नौं गुरु सहिबों ने भी किसी केश रहित प्रेमी की सद्गति नहीं की मानी जावेगी क्योंकि दसों गुरु सहिब सिखों के मत में एक जयोति ही माने जाते हैं, यदि नौं गुरू सहबों ने केश रहित किसी प्रेमी की सद्गति नहीं की मानी जावेगी तो यह बात इतिहास के विरुद्ध है,

क्योंकि नौ गुरु सहिबों के सैकड़ों सिक्ख केश

रहित हुये हैं बल्कि कई मुसलमान भी सच्ची श्रद्धा वाले हुये हैं तो क्या उन्हों की किसी की भी गुरु सहिबों ने सदगति नही की, अगर सद्गति की है तो मुसलमान भी तो केश धारी नहीं थे।

(२६) प्रश्नः— वह मन्तकी यह नहीं सोचते कि केश करतार ने जनम समय से ही शरीर के साथ उत्पत किये हैं किसी ने बाहर से लाकर सिर पर बनावटी चिन्ह नहीं बनाया।

उत्तरः—वह मन्तकी नहीं सोचते तो आप कौनसा सोच रहें हैं यदि केश रखने इसी लिये जरूरी हो सकते हैं कि यह करतार (ईश्वर) ने जनम समय से ही साथ पैदा किये हैं तो ऐसे फिर हाथ और पैरों के नाखन (नहुं) भी साथ ही पैदा किये हैं किसी ने बाहर से लाकर बनावटी नहीं हाथ और पांवों को लगाए तो फिर वह भी नहीं कटवाने चाहिये।

तथा बाहर से लाकर लगाई हुई बनावटी वस्तु ऊपर ही यदि आपको घृणा हो तो सिक्खों के लिये कछैहरा किरपान कड़ा कंघा यह चार कक्के भी ईश्वर ने साथ ही पैदा नहीं किये किन्तु बाहर से बनाकर

लाये जाते हैं तो इनका धारण करना किस युक्ति से सिद्ध किया जा सकेगा। बल्कि मनुष्य शरीर के बस्त्र भी जन्म समय साथ ही नहीं पैदा हुये और दांत भी पीछे ही पैदा हुये हैं अतः यह भी नहीं चाहिये इसलिये केश रखने सिद्ध करने के लिये यही दलील (युक्ति) पर्याप्त नहीं कि केश जन्म समय से ही साथ पैदा हुये हैं। जब तक केशो के लिये यह सिद्धांत न स्थापित किया जाए कि केशों के बिना अध्यात्म या भौतिक उन्नती नहीं हो सकती या केश किसी धर्म को स्थापित करते हैं या धर्म का चिह्न सावत होते हैं।

(२७) प्रश्नः—केशों का होना सिर पर वोझ होता तो कोमल अंग स्त्रियें और फैशन पसन्द नारियें केशों को और भी लम्बे और भारे करने के लिये, केश शृङ्गार आएल, आदि अनेकों उपाय न सोचतीं। जिन पुरुषों को सिर पर केश बोझ भास्ते हैं उन्हों को फिर धड़के ऊपर सिर और दाँए बाएँ वाहवां (भुजा) लटकती भी वोझ हैं इसलिये वह पहले इस बोझ से छुटकारा पाने का प्रयत्न करें।

उत्तरः— केश सिर पर बोझ हैं यह किसी को कहने का कोई अधिकार नहीं। पर जिसने अपने केश

मुन्डन करने के लिये कहा हो कि यह केश सिर पर बोझ हैं तो फिर दूसरे को भी यह कहने का कोई अधिकार नहीं कि यह सिर पर बोझ नहीं, क्योंकि जिस तरीके के शृंगार का जिसको मन में उत्साह हो उसको वह वस्तू कोई बोझ नहीं भास्ती जैसे राजस्थान देश की स्त्रियें पांच-पांच सेर पक्के चाँदी के भूषण पहरती हैं परन्तु उन्हों को कोई बोझ नहीं भास्ता। किन्तू कोई कहे कि उन पांच-पांच सेर पक्के भूषणों का कोई बोझ ही नहीं होता, यदि होता तो वह स्त्रियों कैसे पहरती तो यह बात झूठ है क्योंकि बोझ होता है परन्तु उनको मन के उत्साह (हुलास) करके प्रतीत नहीं होता यह बात अलग है ।

शेष फैश्न पसन्द नारियें केशों को और भी लम्बे और भारे करने के लिये उपाय सोचती है यह भी मिथ्या है क्योंकि बम्बई कल्कत्ते आदि शहरों में कई ऐसी भी फैश्न पसन्द नारिएँ हैं जिन्हों के सिर पर केश कतरे (काटे) हूये होते हैं इसलिये यह जैसा जैसा शृंगार किसी के मन को अच्छा लगता है वह उसके करने में कोई संकोच नहीं करता: अत: यह बात नहीं कि केशों का सिर पर बोझ ही नहीं होता किन्तु होता

है परन्तु जिस पुरुष को लम्बे केश शृंगार रूप भासते हों उसको मन के उत्साह के वश करके कोई बोझ नहीं प्रतीत होता पर जिन्हों को लम्बे केश शृंगार रूप नही भास्ते उन्हों को बोझ प्रतोत होता है।

शेष रही बात जिन्हों को सिर पर केश बोझ रूप हैं वह धड़ पर सिर और भुजा (बाहवां) से भी छुटकारा पाएं तो यह ऐक समझ से परे की बात है क्योंकि समझदार को पता है कि सिर और भुजा में खून दौरा करता है इसलिये जीवत मांस है और सिर तथाः बाहवां (भुजा) अपना बोझ छोड़ कर और भी बोझ उठा सकते है तथा सिर और भुजा अंग काट देने से मनुष्य बेकार हो जाता है और काटने के समय कष्ट (दर्द) भी होता है इसलिये इन्हों का बोझ नहीं परन्तु केशों में खून नही जिस लिये उनको काटने से दर्द (कष्ट) भी नही होता और केश न होने से (काटदेने से) मनुष्य बेकार भी नही होता। शेष केश भुजा सिर आदिकों की तरह कोई बोझ भी नही उठा सकते इसलिये केशों का और सिर भुजा आदि अगों का बहुत अन्तर है अतः केशों के साथ सिर भुजा आदि अंगों को तुल्यता देनी यह समझदारी से परे

की बात है,

(२८) प्रश्न:—असल में बोझ बोझ कहकर ठीक ही इन्हों को बोझ बना लेना एक आदत है नहीं तो निहँग सिघों के सिर पर कैसे ऊँचे दुमाले और कई कई सेर लोहें के शस्त्र भी दिन रात्री सजे रहते हैं और उन्हों को प्रवाह तक नहीं होती। जूएँ तो मैले कुचैले रहन करके वस्त्रों में भी पड़ जाती हैं क्या फिर बस्त्र भी पाने छोड़ दिये जाते हैं।..........सच्च पूछो तो केशों का अड़ जाना या जूएं पड़ जानी कङ्घा आदि न करने की बेप्रवाही से कुदरत की ओर से पुरुष को दण्ड दिया जाता है........... यदि एक बार प्रति दिन कङ्घा और सात आठ दिन के पश्चात् भी सिर धोया जाय तो केश अड़ने या जूएं पड़नी तो कहां रही उल्टा रेशम जैसे कोमल निखरे हुये सुन्दर केश शोभा देते हैं।

उत्तर:—यह पहले ही बताया गया है कि जिस पुरुष को जिस वस्तु का मन में उत्साह हो उसको उस वस्तु के धारण करने में कोई कष्ट नहीं प्रतीत होता: इसलिये निहँग सिघों को ऊँचे दुमाले और कई सेर लोहे के शस्त्र सिर पर धारण करने का मन में उत्साह

(हुलास) है इसलिये उनको उस बोझ की कोई प्रवाह नहीं। नहो तो जिस वस्तु के धारण करने का उन्हों को मन में उत्साह नही वह वस्तु छे माशे या एक तोला बोझ की होने पर भी उन्हों को बोझ रूप भासेगी जैसे जनेऊ (यज्ञोपवीत) का बोझ एक तोला भी नही परन्तु पूर्वोक्त आज के निहॅग सिघों को वह जनेऊ गले में डालना बोझ रूप ही प्रतीत होगा अतः यह बात नहीं कि पूर्वोक्त कई सेर लोहे के शस्त्रों आदि का कोई बोझ ही नही, केवल बोझ बोझ कहने से एक बोझ की आदत ही हो जाती हैं।

शेष बस्त्रों में जूएँ पड़ जाती हैं तो बस्त्र कुदरत की ओर से बखशिस किया हुआ शृँगार नहीं किन्तु मनुष्यों ने अपनी तर्फ से यह शृंगार स्थापित किया हुआ है यदि केश कुदरत की ओर से शृंगार हैं तो फिर तेल साबुन कङ्घे आदि साधनों की सफाई के लिये आवश्यकता नहीं होनी चाहिये और यदि केश और बस्त्र एक जैसी ही वस्तू हैं तो फिर बस्त्र गर्मी के समय उतारे भी जा सकते हैं और केश भी क्या उतारे जा सकेंगे या नहीः और केशों का अड़जाना आदि, कङ्घा आदि न करने की बेप्रवाही से कुदरत की

ओर से दण्ड है माना जाए तो जो मनुष्य केश नही रखते उन्हों को कुदरत यह दण्ड नही दे सकती इसलिये कुदरत की ओर से यह दण्ड मिलता है यह सत्य मानने के लिये यह दलील कुछ काफी (प्रयाप्त) नहीं और यदि कोई हठ (आग्रह) ही किया जाय तो फिर सम्पूर्ण आयू प्रयन्त साबन आदि मलते रहने पर भी बृद्ध होने से मुख की सुन्दरता नष्ट हो जाती है तो वह किसकी ओर से दण्ड मिलता है। और तेल साबन कङ्घा आदि करना कुदरत की ओर से जरूरी आज्ञा कैसे हैं और केशों को मुन्डन कर देना कुदरत की ओर से निषेध आज्ञा कैसे हैं, तथा सात आठ दिनों के पश्चात् सिर धोया जाए और एक बार हर रोज कङ्घा किया जाए तो केश रेशम जैसे कोमल सुन्दर होते हैं तो फिर कुदरत की ओर से ही केश शृंगार रूप रेशम जैसे कोमल सुन्दर आदि सिद्ध न हुये किन्तु अपनी तरफ से कुछ प्रयत्न करने से रेशम जैसे कोमल सुन्दर सिद्ध हूये अतः अपनी ओर से प्रयत्न अपनी अपनी रुची के अनुसार सब मनुष्य करते हैं

और मुन्डन कराना तथा बालों को कटांना भी अपनी ओर से सुन्दरता के लिये ही प्रयत्न है इसलिये

ऊपर कही गई दलीलों का कुछ सिर पांव नही है जिन्हों के आधार पर मनुष्य मात्र के लिये केश रखने सिद्ध हो सकें ।

(२६) प्रश्नः—मिसिज़ ऐफ़ ए सटील साहबा डिप्टी कमिश्नर हिसार की सुपत्नी अपनी रची, सुघड़ बीबी) नाम की पुस्तक के दूसरे भाग पर स्त्रियों को शिक्षा देती है, तुमने देखा होगा जो सिक्खों के सिर पर केश कैसे सुन्दर लगते अरु शोभा देते हैं कारन यह कि उन्हों में केशों की सम्भाल रखनी धोते रहना कङ्घा फेरना धार्मिक रहत है, अच्छे सुथरे होना निः संदेह बड़ी सुन्दरताई है,

उत्तर—अच्छे सुथरे होना सुन्दरता से किसी को भी कोई इन्कार नही परन्तु पूर्वोक्त पुस्तक के प्रमाण से मनुष्य मात्र के लिये केश धारण करने का बिधान स्थापित कैसे हो जाता है, क्योंकि पूर्वोक्त प्रमाण में कोई वाक्य श्री मुखवाक नही, शेष सिखों में केशों को धोते रहना कङ्घा फेरना धार्मिक रहत है यह पूर्वोक्त पुस्तक की कर्ता देवी ने सिक्खों के लिये कहा है, तो सिक्खो ने जब केश रखने हैं तो केशों की सफाई के लिये धोते रहना और कङ्घा फेरना स्वाभाविक है

किन्तु जो लोग सिक्ख पन्थ में नही और केश रखते हैं वह भी केशों की सफाई के लिये केशों को धोय कर कङ्घा आदि फेरते हैं तो क्या उन्हों की भी यह क्रिया उन्हों के लिये धार्मिक रहत मानी जाएगी ? यदि नही तो केवल सिखों के लिये ही कैसे मानी जा सकेगी और सिखों के सिर पर केश सून्दर लगते हैं तो यह भी बहुत प्रसन्नता की बात है परन्तु सिखों को केश रखने की रुची (इच्छा) है इसलिये केश उनको सुन्दर लगते हैं किन्तू जिन्हों को केश रखने की रुची नहीं उन्हों को बिना केशों के भी सुन्दरता भासती है क्यों कि सुन्दरता अपनी अपनी रुची के अधीन मानी जाती है जैसे किसी को धोती पहरनी अच्छी लगती है और किसी को पजामां, पैन्ट आदि तैसे प्रत्येक मनुष्य के दिमाग़ में हरेक वस्तू की सुन्दरता का चिह्न अलग अलग है अतः सिर की सुन्दरता भी किसी ने केश धारण करने में मानी है और किसी ने कटवाने में और किसी ने मूल से ही चट्टम कराने में इसलिये इसका मनुष्य की आत्मिक या व्यवहारिक उन्नति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, शेष रही सफाई की बात कङ्घा आदि करना केशों की सफाई है तो केश मुन्डवा देने सिर की

सफाई है इसलिये साफ सुथरे रहने से किसी को भी [illegible] इन्कार नही,

(३०) प्रश्नः—उल्टा केश तों काम काज करते हुये और चलते फिरते भी सूख जाते हैं पर रगड़ चट या फेश्न टेबल समय हजांम की शर्ण में तन मन अर्प कर समाधी स्थित हुये बिना काम ही नही चलता ।

उत्तरः—यह तो अपनी अपनी रुची है जिसको केशों के रखने में सुख है वह केश रख लेवें जिसको नाई के पास तन मन अर्पन में सुख है वह पुरुष नाई से सुख ले लेवे । केशों के रखने या मुन्डन करने करके किसी धार्मिक या व्यवहारिक भाव में कुछ अन्तर नहीं पड़ता ।

क्योंकि श्री कबीर जी लिखते हैं कि, कबीर प्रीति एक सिउ किये आन दुबिधा जाए, भावे लांबे केस कर भावे घररि मुडाए, (श्लोक कबीर) भाव कबीर जी कहते हैं कि प्रीति एक परमात्मा से करनी चाहिये और द्वैत चली जानी चाहिये कि यह केश धारी है और यह केश रहित है, चाहे कोई लम्बे केश कर लेवे अथवा चाहे कोई घररि (रगड़) के मुन्डा देवे कोई अन्तर नहीं पड़ता ।

शेष रही बात केश काम काज करते और चलते फिरते भी सूख जाते हैं। यह छूट भी उन्हों को हो सकती है जो सज्ज़न केश धारी हैं पर सिक्ख पन्थ में सम्मिलित नही हैं, क्योंकि सिक्खों के लिये भाई नन्द लाल के तनखाहनामें, में लिखा है कि, नग्न होय बाहर फिरे नग्न सीस जो खाय। नग्न प्रसाद जो बाटई तनखाही बडो कहाय,

तथा: रहत नामों का सार। अंक (२१) में लिखा है कि वाहिगुरु जी का खालसा कंस हरे करन और कङ्घा करन के बिना केस नङ्गे न रखें, नङ्गी केसी ना खाए न बाजार फिरे न सोए।

अतः नग्न केशों से जब न बाजार जा सकता है और न ही बाहर फिर सकता है तथा न ही कुछ खा सकता है और न ही सौं (निन्द्राकर) सकता है। तो काम काज करते चलते फिरते सिर पर केश नग्न रखकर कैसे सूखाए जा सकते हैं। इसलिये यह पाबन्दी (प्रतंत्रता) नाई को तन मन अर्पित करने से भी अधिक मालूम देती है। परन्तु जिस पाबन्दीं में रहने की किसी की रुची हो वह उसी में ही रहकर प्रसन्न रहता हैं।

(३१) प्रश्न:—लांबे केंस कर, का इशारा उनकी तर्फ है जो बट के दूध अथवा अन्य कई उपायों से केश लम्बे करके गले में लिटा लटकाते या सिर पर जटा आदि बड़ाते हैं।

उत्तर:—केश न मुन्डाए जाएँ तो आपही लम्बे हो जाते हैं। बट के दूध के साथ लम्बे नहीं हो सकते किन्तु जटा बन जाती हैं। परन्तु श्री कबीर जीका तात्पर्य यदि जटा धारी लोगों की ओर ही होता तो पाठ में 'केस' पद लिखने की आवश्यकता नहीं थी, फिर तो जटा, या लिटा पद ही लिख सकते थे तथा यदि आग्रह ही किया जाय कि केश बट के दूध आदि से बिना लम्बे नहीं हो सकते, तो आज केश धारी सज्जन कङ्घा भी प्रतिदिन करते हैं तो भी केश लम्बे हो जाते हैं क्योंकि यदि लम्बे न हों तो फिर सिर पर जूड़ा कैसे बांधा जा सकता है यदि कहा जाय कि केश और जटा, पद का एक ही अर्थ है इसलिये यहां पर केश पद ही लिख दिया है। तो ऐसे पीछे प्रश्न नं. (२४) में सूर्य प्रकाश, में से, केश धार सिर पर सिख आवें, आपने लिखा है उसका अर्थ भी यह होगा कि सिख जटा धारण करके सिर पर आवें।

फिर सिर पर केवल (बाल) केश ही रखने यह बात नहीं हो सकेगी।

(३२) प्रश्नः—घररि मुन्डाए। का अर्थ रगड़ चट कराने के उत्साह में तुम ने आप ही रगड़ के मुन्डाए देवे लिख दिया है परन्तु इसका भाव यह नहीं कि कबीर जी सिर मुन्डाने की यह आज्ञा दे रहे हैं ......उल्टा कबीर जी तो तुम दोनों को यह सूचना कराते हैं कि चाहे तुम केश लम्बे करो भाव जटा बड़ाओ और चाहें मूल से ही सिर और मूंह मुन्डवा दो पर द्वैत का नाश तो तब ही होगा जब एक निरंकार के साथ प्रीति करोगे.......तात्पर्य यह कि सिर मूंह मुन्डाने से और जटा आदि भेष धारण से दुबिधा दूर नहीं होती।

उत्तरः—घररि मुन्डाए का अर्थ यदि आप जी कों रगड़ के मुन्डा देवे अशुद्ध प्रतीत होता है तो तुम आपही अर्थ करलो क्या घररि = घरड़ के मुन्डा देवे यह अर्थ ठीक है।

शेष जब आप भी मान रहे हो कि श्री कबीर जी यह सूचना करा रहे हैं कि चाहें तुम लम्बे केश

रखो और चाहे सिर मूंह मुन्डवा छोड़ो द्वैत का नाश तो तब ही होगा जब एक नरंकार के साथ प्रीति करोगे। तो सिद्ध हुआ एक नरंकार के साथ प्रीति करनी ही द्वैत नाश के लिये मुख्य साधन है और केश रखने या मुन्डा देने कुछ साधन नहीं तो फिर केश रखने या मुन्डा देने से आत्मिक या व्यवहोरक कोई लाभ नहीं तो यह अपनी अपनी रुची के अधीन ही केश रखने या मुन्डाने सिद्ध हुये तो श्री कबीर जी केश मुन्डाने की आज्ञा कैसे नही दे रहें। और जो आपने तात्पर्य बताया है कि भेष धार्ण करने से दुबिधा दूर नहीं होती तो हम भी इसके सहमति हैं कि किसी प्रकार का शारीरक भेष बना लेने से दुबिधा दूर नही हो सकती चाहे कोई कड़ा कछैहरा किरपान केश आदि धारण कर लेवे क्योंकि अपने अपने भेष स्वांग को प्रत्येक अच्छा समझता है प्ररन्तु यहां प्रश्न प्रकट होता है कि वह द्वैत कौनसी है जिसको नरंकार से प्रीति करके दूर करना है यदि कहा जाय कि अलग अलग शारीरक भेष ही द्वैत है तो फिर हमारा किया अर्थ ही ठीक हो गया कि प्रीति एक परमात्मा से करनी चाहिये और अन्य द्वैत चली जानी चाहिये कि यह

केश धारी है और यह नही यदि कहा जाय कि द्वैत कोई और है तो भी वह जब बाहर के स्वांग या किसी भेष से नाश नही हो सकती तो फिर चाहे वह अपनी रुची से कोई भेष धारण करे यदि कहा जाए कि केश धारण करने किसी भेष में शामिल नहीं हैं इसलिये केशों के रखने से द्वैत नाश हो सकती है, तो आपने ऊपर अर्थ किया है कि श्री कबीर जी सूचना कराते हैं कि द्वैत का नाश तब ही होगा जब एक नरंकार के साथ प्रीति करोगे, तो श्री कबीर जी ने फिर केशों के रखने से द्वैत का नाश होना क्यों न कहा इस से सिद्ध होता है कि कबीर जी का भाव यहां एक परमात्मा से प्रीति करने का है, केश आदि धारण करने का नहीं, तथा केश धारी होने से यदि द्वैत नाश हो सकती हो तो आज सैंकड़ों केश धारी सज्जन हैं बल्कि स्त्रियें अधिक केश धारी ही हैं तो उन्हों में किसी प्रकार की द्वैत नही होनी चाहिये अतः केश मुन्डाने या रखने किसी अध्यात्म या व्यवहारक उन्नती का साधन सिद्ध नहीं होते इसलिये अपनी अपनी रुची के अधीन ही इन्हों का रखना या मुन्डाना हो सकता है।

(३३) प्रश्नः—इसीलिये रुन्ड मुन्ड कराने वाले भेष धारियों को भ्रम जाल में फन्से हुए सिद्ध करते हैं।

जोगी कहहं जोग भल मीठा अवर न दूजा भाई।
रुन्डित मुन्डित एकै शबदी ए कहहं सिद्ध पाई,
हरि बिन भरम भुलाने अंधा.............

(गउड़ी कबीर जी) इतना ही नही सिर मुन्डाने वालों को इन श्लोकों में ही ताड़ना करते हैं यथाः।

कबीर मन मून्डिआ नही केश मुन्डाए काए।
जो किछ किआ सो मन किआ मून्डा मून्ड अजाए।
श्लोक १०१

यहां ही समाप्ति नहो गउड़ी राग के शब्द में भेड का पद देते हैं, यथा मून्ड मुन्डाए जो सिद्ध पाई। मुकति भेड न गईआ कांई,......

उत्तरः—जो सज्जन किसी सिद्धी प्राप्ति के लिये केश मुन्डवाने या रखने अथवा कोई अन्य भेष बनाने मात्र साधन मानते हैं हम भी इसके सहमति नहीं हैं, क्योंकि केवल शारीरक स्वांग बाहर कोई होवे वह किसी सिद्धी प्राप्ति का कारन नहीं हो सकता, कि जब

तक अतः करण की शुद्धी का कोई साधन अन्दर से न किया जावे, शेष। जोगी कहह जोग भल मीठा, शब्द में केवल मुन्डन कराने वालों को ही नहीं कहा साथ औरों को भी कहा है। जैसे जोगी कहते हैं हमारा योग ही अच्छा और मीठा है अन्य कोई दूसरा हमारे सादृश्य नहीं है, यह सबी हरि नाम से बिना भेष मात्र में भूले हूये अन्धे हैं। इसलिये इसमें जो भी मत केवल किसी भेष मात्र में सिद्धि की प्राप्ति मानता है या जो मज़हब यह कहता है कि हमारा मज़हब (पन्थ) ही अच्छा है और मीठा है अन्य हमारे जैसा कोई नहीं इन्हों सर्व का ही खन्डन है, किन्तू जो लोग किसी सिद्धी प्राप्ति के लिये सिर नहीं मुन्डवाते और नां ही केश आदि धारण करते हैं केवल अपनी रुची अनुसार सहज स्वभाव ही केश मुन्डाते हैं उन्हों का यहां खन्डन समझना महां अज्ञान है। यदि कहा जाय कि केश रखने शारीरक भेष नहीं यह तो शरीर का अंग है। तो शारीर के हाथ पाओं आदि अंगों को कौन अपनी प्रसन्नता से कटवाना चाहता है अतः यह केश अंग होते तो कोई भी मनुष्य इन्हों कों अपनी प्रसन्नता से नहीं था कटवा सकता,

और यहां यह प्रश्न होता है कि भेष शरीर पर धारण किया जाता है या कि जीवात्मा पर। यदि ज़ीवात्मा पर कहा जाए तो वह शरीर के भीतर है नेत्रों के विष्य नहीं और शरीर पर कहा जाय तो केश भी शरीर पर ही रखे जा सकतें हैं भीतर नहीं और मुन्डन भी शरीर पर ही किया जा सकता है इसलिये ऊपर कहे गए किसी चिह्न का भी, भीतर जीवात्मा पर कैसे प्रभाव हो सकता है अतः केश रखने या मुन्डवाने शारीरक सुन्दरता के लिये अपनी अपनी रुची के ही अधीन सिद्ध होते हैं।

शेष कबीर मन मून्डिआ नहीं केस मुंडाय काए। श्लोक में कहे रहे हो कि सिर मुन्डाने वालों को ताड़ना की है, इसका भी स्पष्ट भाव यह है कि जब तक मन पर विषयों की मल है भाव मन (मून्डिआ) साफ=शुद्ध नहीं किया तो केश क्यों मुन्डाए भाव केवल सिर को साफ करने से क्या हूआ क्योंकि मन ने जो कुछ करना चाहा सो ही कर लिया तो सिर का मुन्डन व्यर्थ ही गया इस में से उल्टा सिद्ध यह हूआ कि जिन्हों के मन साफ हैं उन्हों के केश मुन्डवाने व्यर्थ नहीं किन्तू जिन्हों के मन साफ नहीं हैं। उन्हों

के लिये केश मुन्डवाने व्यर्थ हैं, तो इसके अर्थ में केवल सिर मुन्डवाने वालों को ताड़ना क्या हूई। और, मुन्ड मुन्डाए जो सिद्ध पाई, वाले शब्द में भी भेड का पद=द्रजो उन्हें को दिया है जो किसी सिद्धी प्राप्ति का साधन मुन्डन ही बताते हों किन्तू जो अपने शरीर की सफाई के लिये मुन्डन आदि कराते है उन्हों का इस शब्द के अर्थ में स्वन्डन करना केवल विरोध मात्र ही है क्योंकि इस में स्पष्ट पाठ है, मून्ड मुन्डाए जो सिद्ध पाई। भाव जो सिर मुन्डाने में ही सिद्धि की प्राप्ति कहते हैं तो ऐसे भेड भी छे मास के पश्चात मून्डी जाती है।

यदि कोई आग्रह ही किया जाय तो ऐसे इसी शब्द में। बिन्द राख जउ तरिऐ भाई, आदि पाठ लिखकर वीर्य रखने का भी खन्डन ही किया है तो क्या कोई समझदार पुरुष यह निःसंदेह मान लेगा कि मनुष्य के लिये वीर्य रखना भी अनुचित है क्योंकि वीर्य का दमन न किया जाए तो शूर वीर कैसे हो सकते हैं और निर्बलता तथा कई रोगों का शिकार मनुष्य कैसे न हो जायँगे और नित्य कामी=काम चेष्टा (मैथुन) होने से मन की व्यवस्था भी क्या होगी, क्या कोई

अध्यात्म उन्नति कर सकेगा। इसलिये तैसे यहां पर मुन्डन कराने का भी वास्तव खन्डन नहीं किन्तू जैसे कोई अन्य भक्ती ज्ञान आदि साधनों से बिना केवल वीर्य राखने में ही अपनी मुकित मानता है तो उसके लिये वीर्य रखने का खन्डन क्रिया है वास्त्व वीर्य का अत्यन्त खन्डन नहीं किया जा सकता। तैसे जो सिर मुन्डाने मात्र को ही किसी सिध्दि का साधन मानते हैं जैसे आज कल के कई ज्ञानी भोले भाले प्रेमी लोगों को कह दिया करते हैं कि केशों के बिना मुक्ति नही मिलती। अत: तैसे मुन्ड़न करने से मुक्ति रूपी सिद्धी कहने वालों के लिये मुन्डन का निराकरण (खन्डन) किया है किन्तू जो लोग अपने शरीर की सफाई या किसी अन्य लाभ को मुख्य रख-कर सिर मुन्डवाते है उन्हों का यहां खन्डन करना केवल पक्ष पात है और कुछ नहीं क्योंकि इस शब्द में राम नाम द्वारा ही मुकित मानी है अन्य किसी नग्न आदि रहने मात्र साधनों से नहीं।

(३४) प्रश्न:—श्री दस्मेंश जी का श्री मुखबाक अकाल उस्तति, में से जो आप जीने पीछे प्रश्न, नं० २२ के उत्तर में, देश फिरिओ करि भेस तपो धन केस

धरे न मिले हरि पिआरे, लिखा है इस में कई ज्ञानी वताते हैं कि, धन के सधरे न मिले हरि पिआरे। ऐसे पाठ है

उत्तर:—ऐसे पाठ करने से श्री गुरु जी की कविता के प्रभाव को हानी पहुंचती है क्योंकि देस फिरिओ कर भेस तपो धन। इतने पाठ पर ही विश्राम ठीक रहता है नहीं तो विश्राम, देस फिरिओ कर भेस तपो, पर ही देना पड़ेगा, या फिर, देस फिरिओ कर भेस तपो धनके, इतने पाठ पर देना पडेगा किन्तू इन्हों दोनो ही पाठों पर विश्राम देना कवित की चाल को ठीक नहीं रहने देता। इसलिये, देस फिरिओ कर भेस तपो धन, यहां पर विश्राम दिया जाए तो फिर आगे पाठ आपही। केस धरे न मिले हरि पिआरे, सिद्ध हो जाता है,

शेष श्री मान सः घः सः काहन सिह नाभा जीने इस केश धरे, पाठ की टिपणी में। गुरमत सुधाकर कलां १ तीसरी एडीशन के पृष्ट ३२ पर लिखा है कि जटा आदिक बनावटी केश धारण करन तो देह का अंग रूप ज़ो केश हैं उन्हों वास्ते धरे पद नहीं बन सकता सिद्धांत विचारिये तो यहां पर गुरु सहिब का

भाव यह है कि केवल चिह्न वाहिगुरु की प्राप्ति का कारन नहीं चाहे इसमें यहां केशों के धारण करने से हरि नही मिलता यह अर्थ नहीं भी किया किन्तू बनावटी जटा आदि केश धारण करके हरि नहीं मिलता इस अर्थ में तो कोई अड़चन ही नहीं अतः पूर्वोक्त श्री मान जो के इस अर्थ अनुसार भी पूर्वोक्त पाठ । केस धरे न मिले हरि पिआरे, ही ठीक सिद्ध होता है किन्तू धनके सधरे न मिले हरि पिआरे, ठीक नहीं क्योंकि फिर तो अर्थ में केशों का कथन ही नहीं आसकता था।

(३५) प्रश्नः—जब यहां पूर्वोक्त सः बहादर जी ने, केस धरे का अर्थ बनावटी जटा आदि केसधारण करने से किया है तो फिर असल केश धारण करने से परमात्मा नहीं मिलता यह श्री दसमेशजी का भाव सिद्ध न हूया।

उत्तरः—पूर्वोक्त सः बहादर जी ने केस पद का अर्थ बनावटी जटा आदि इसलिये किया है कि वह केशों को धार्मिक रहतों में सम्मिलित मानते थे, नहीं तो श्री दस्मेश जी यदि केस पद का अर्थ बनावटीं जटा आदि ही मानते होते तो फिर अपनी बाणी में जहां

उन्हों ने जटा का खन्डन किया है वहां जटा पद नहीं लिखना चाहिये था किन्तू वहां यहि केस पद ही लिखना चाहिये था परन्तु ऐमा नही जटा पद हीं लिखा है यथाः धयान लगाए ठगयो सभ लोगन सीस जटा नख हाथ बढ़ाए (सवय्ये) तथा यदि कहा जाय कि श्री दस्मेश जीने केश और जटा पद यह दोनों ही बनावटी जटा के बोधक लिखे हैं। तो फिर यहां यह प्रश्न पैदा हो जाता है कि श्री दस्मेश जी ने फिर असल केश रखने के लिये कौनसा पद अपनी वाणी में लिखा है जिस से केश रखने सिद्ध किये जाएँ। क्योंकि केश और जटा यह दोनों पद ही जब बनावटी जटा के लिये लिखे हूये हैं तो फिर इन दोनों में से किसी पद के साथ केश रखने सिद्ध नहीं कियेजासकते जब नहीं किये जा सकते तो इन्हों से अलग़ जब तक कोई और पद लिखा हूआ न मिले तब तक असल केश रखने श्री दसमेश जी का भाव है यह सिद्ध नहीं किया जा सकता

और जटा, पद से उपर लिखे अनुसार जब जटा को धारण करना निषेध अर्थ है तो आप जी ने शिव जी और श्री रामचन्द्र आदिको की जटा थी यह

पीछे लिखकर वहाँ असल केश धारी थे यह सिद्ध करने का प्रयतन कैसे किया क्योंकि जटा का जब आप यहां खन्डन करते हो कि जटा के धार्ण करने से हरि नही मिलता क्योंकि जटा धार्ण करनी पाखन्ड कर्म है तो वहां यहि जटा कैसे सफल हो गई यदि आपके निश्चय में वहां जटा का अर्थ असल केश ही था तो फिर यहां उसी केश पद का अर्थ बनावटी जटा चट पट कैसे बन गया। इसी से साबत होता है कि पक्ष पात है तथाः यदि आग्रह ही किया जाए कि यहां केश पद का अर्थं बनावटी जटा है तो फिर जहां जटा पद श्री दस्मेश जी ने लिखा है वहां जटा पद का अर्थ असल केश ही करना पड़ेगा। ऐसा करने से श्री दस्मेश जी लिखते हैं कि, जटा न सीस धार हों। विचित्र नाटक अध्याय ६ अतः अर्थ यह होगा कि हम असल केश सिर पर नहीं धार्ण करेंगे। इसलिये केश पद का अर्थ यहां बनावटी जटा नहीं किन्तु असल केश रखने ही अर्थं है।

शेष श्री दस्मेश जी, उच्च कोटी के अध्यात्म भाव को समझने वाले थे वह केवल केश रखने मात्र शरीर के बाह्य चिह्न मात्र को ईश्वर प्राप्ति का

साधन कैसे मान सकते थे। यदि नही मानते थे तो फिर उन्हों के लिये ऐसा लिखना कोई अनुचित नही था कि, केश धरे न मिले हरि पिआरे। केवल केश मात्र रखने से भी हरि नही मिल सकता।

यदि यह आग्रह किया जाय कि वह केस रखने भी परमात्मा की प्राप्ति का साधन मानते थे। तों ऐसे एक साधारण पुरुष भी नहीं कह सकता कि केस रखने भी एक परमात्मा प्राप्ति का साधन है तो श्री दसमेश जी इतने उच्च कोटी के अध्यात्म भाव के वेता कैसे यह कह सकते थे कि केश भी एक ईश्वर प्राप्ति का साधन हैं। और यदि श्री दसमेश ज़ी केशों को ईश्वर प्राप्ति का साधन या कोई धार्मिक चिह्न मानते होते तो वह अपनी कविता में राक्षसों के लक्षण लिखने के समय 'केस बड़े सिर बेस बुरे अरु देह में रोम बडे जिनके' (कृष्ण अवतार छन्द १४६४ दस्म गुरु ग्रन्थ) आदि सिर पर केश बडे होने भी लक्षण ना लिखते।

(३६) प्रश्नः—कृष्ण अवतार की कथा श्री मद् भागवत का टीका है पर यह सवईया यदि आप उपदेश रूप ही समझते हो तो फिर मुख में से दांत

भी निकलवा देवो क्योंकि, दांत सो दांत बजे तिनके। पाठ भी इसी सवईये का है और सर स्रोणत के अखिआं। पाठ पढ़के अखिआं (नेत्र) भी निकलवा देवो (गुरमत दर्शन पृष्ट १०३)।

उत्तरः—दस्म गुरु ग्रन्थ, में कृष्ण अवतार की कथा श्री मद्भागवत् का टीका नहीं क्योंकि कृष्ण अवतार की कथा में खड़गसिंह आदिकों के युद्ध का वर्णन है किन्तु श्री मद्भागवत् मूल में यह कथा खड़गसिंह वाली कहीं भी नही इसलिये श्री दसमेश जी यदि केवल टीकाकार ही होते तो वह यह कथा श्री मद्भागवत के विरुद्ध कैसे बीच लिख सकते थे। यह विशेष निर्णय देखना हो तो हमारे लिखे हुए श्री देवी निर्णय, पुस्तक में पृष्ट ८९ पर देखो अथवा हमारे लिखे हुए। गुरमत विचार सूर्य। भाग १ पुस्तक के पृष्ट १२० पर देखो।

शेष दांत सों दांत बजे तिनके। पाठ पढ़ कर उन सज्जनों को दांत और नेत्र निकलवाने का उपदेश हो सकता है जो सज्जन यह मानते हों कि दांत और नेत्र ही ईश्वर प्राप्ति का साधन हैं या कोई धार्मिक चिह्न हैं परन्तु जिनके दांत दर्द (दुःखी) करते हों वह

आपने सुख के लिये निकलवा भी देते हैं। अतः दाँत और नेत्र शारीरिक सुख के साधन हैं कोई धर्म का चिह्न नहीं यदि आग्रह ही हो तो सूरदास जैसे ईश्वर के भक्त हुये हैं और दांतों से हीन भी आज कई गुरमुख हैं इसलिये दान्त और नेत्र अपने शारीरिक सुख के लिये सुरक्षित रखने की कोशिश होती है किन्तु परमात्मा या धर्म प्राप्ति के लिये नहीं तैसे केशों का भी शारीरक सुख हों तो रख लेवें ना हो तो ना रखे यह ईश्वर या धर्म प्राप्ति के साधन नहीं।

(३७) प्रश्नः—इससे बिना केशों बाबत श्री दसमेश जी का अपना आशा देखना हो तो। गुर बिलास पातशाही १० पढ़ो यथाः बिना शस्त्र केसं नरं भेड जानो। गहे कान ताको किते लै सिधानों। इहै मोर आज्ञा सुनो हे पिआरे। बिना तेग केसं दिवो ना दिदारे। इतना ही नहीं सूर्य प्रकाश रुत ३ में लिखा है। छाप गुरु की गुरसम जानहु। गुरसम अदब केश को ठानहु। जो उत्तारहिँ ताहिँ तज देना ....कैसी आश्चर्य की बात है कि जो केश श्री दसमेश जी को उक्त प्रमाण में कहे अनुसार अत्यन्त प्रिय लगते हों वह आपको बुरे और भयानक भास्ते हैं।

उत्तरः—हमको केश बुरे और भयानक नहीं लगते हमतो मानते हैं कि जिसको केश लाभदायक प्रतीत हों वह केश रखें तो हमको बहुत प्रसन्नता है परन्तु देखना यह है कि पूर्वोक्त प्रमागा आप के प्रकट किये हुये क्या सच्चाई रखते हैं। क्योंकि ऊपर लिख रहें हो कि श्री दस्मेश जी का अपना आशा देखना हो तो गुरबिलास पाः १० पढ़ो यहां पर प्रश्न यह होता है कि गुरबिलास या सूर्य प्रकाश क्या श्री दस्मेश जी की स्वतंत्र रचना है या और किसी कवि लोगों की कृत है यदि श्री दस्मेश जी की स्वयं मुखा-बिन्द से निकली हुई वाणी नहीं तो किसी अन्य कवि लोगों के लिखे हुये पुस्तकों में से श्री दस्मेश जी का अपना आशा = भाव कैसे देखा जा सकता है किन्तु इन कवि लोगों के पुस्तकों मेंसे इन कवि लोगों का ही आशा देखा जा सकता है।

शेष पूर्वोक्त प्रमाण में लिखा हैं कि । बिना शस्त्र केसं नरं भेड जानों, तो दसों गुरु सहिवों में से केवल षष्ठे (६) गुरु और दसम गुरु यह दो गुरु सहिब ही शस्त्र धारी माने जाते हैं और आठ गुरु सहिब शंस्त्र धारो नहीं थे तो इस प्रमाण से आठ श्री गुरु

सहिबों का ही आप अपमान कर रहे हैं तो इस प्रमाण को हम कैसे प्रमाणिक मान सकते हैं, जिसमें गुरु सहिबों का ही अपमान हो, प्रतीत होता है आप ने केशों के उत्साह में पूर्वोक्त प्रमाण बिना सोचे समझे ही प्रकट कर दिया है। नहीं तो बिना शस्त्र धारण किये भी बड़े-बड़े नाम के रसिक भक्त और आत्म ज्ञानी महां पुरुष हूये हैं और आज कल भी है। उन सबको ही भेड़ का पद दे देना ठीक नहीं।

और बिना केस तेगं दिवो न दिदारे, तो अपने यहां पर ही माने हूये। सूर्य प्रकश की रुत ४ अंसू ३५ में देखो बाबा राम कुयर जी श्री दस्मेश जी के परम शिष्य थे परन्तु केशों के बिना हो थे और श्री दस्मेश जी का कितना समय दर्शन करते रहे हैं वहां पर श्री गुरु जी ने दर्शन देने से इन्कार ही नहीं किया शेष सूर्य प्रकाश में ही देखो सींहे उपल क्षत्री के पुत्र का मुण्डन था तो श्री गुरु अङ्गद देव जीने आज्ञा दी कि यह छत्तरे ना मारो और, हमरे आगे मुण्डन करो, उर को भ्रम सर्व पर हरो, विघन जिठेरन को नहीं होए। सूर्य प्रकाश रास १ अंसू २६ यदि श्री गुरु अङ्गद देव जी केश कटवाने अच्छे न समझते होते तो

सींहें उपल को यह कभी न कहते कि हमारे सामने मुण्डन करो आप के जिठेरे कोई विघन नहीं पाएँगे अतः श्री दसमेश जी के समय यह कैसे माना जा सकता है कि केशों का सम्मान गुरु के तुल्य ही जानों, यह गुरु जीने आज्ञा दे दी है इस लिये यहपूर्वोक्तप्र प्रमाण कोई सच्चाई नहीं रखते। यदि आग्रह ही हो कि श्री दसमेश जी ने केशों को धार्मिक रहतों में शुमार किया है तो क्या कारण है श्री दसमेश जीने अपने मुखार्बिन्द से उच्चार्ण की हूई वाणी में कहीं भी केशों के रखने के लिये कोई आज्ञा नहीं लिखी,

शेष इसी सूर्य प्रकाश के कर्त्ता ने बाबा राम कुयर के केश न रखने करके सिक्खों की ओर से प्रश्न प्रकट करके उल्टा बाबा राम कुयर जी की श्री दसमेश जी की ओर से उपमां ही प्रकट की है, यथः राम कुयर जी सिख विशेष। क्यों नहि धारत है सिर केस, इह मनके सभ संसे रहे। सकल खालसा उत्तर चहे............दया सिन्धू सुनके सभ बैन। राम कुयर की दिस कर नैन। ४० बिकसत श्री मुख वाक बखाने। उच्चितकेस रखबे सिख जाने.........अपनें

के सिर ऊपर बाहिर। सभ के सकल विलोकत जाहिर।
इसके अन्तर वधहि हमेस। जाहि तरे को दीर्घ केस।
··· ········· तिस कारन ते भुज गहि पानि।
सभन विखै मुख मधुर बखानि। मोहि स्वरूप अहे
सो तेरो। तेरो अहे सु जानो मेरो॥ ४४ तोहि मोहि
महि भेद न कोऊ। एक रुप के तन हैं दोऊ। ····
····· भेद लखत है जे इनमाही, परम रहस सु जाने
नाही। तुम सिखन के हहु सिरमोर। समता पहुच
न सक है और। ४६ ······ इस प्रकार कह बहु
वडिआई। सकल खालसे विखे सुनाई। रुत ४ अंसू ३५
इसलिये इन इतिहासक ग्रंथों में से ही सिद्ध हों रहा
है कि श्री दसमेश जी केश रखने के इतने पक्षपाती
नहीं थे भाव केश रखने के हक्क में नहीं थे। और
यह रहत मजदूर तथा किसान सिक्खों के लिये धारण
करनी भी अति कठन है—क्यौंकि केशों का अदब=सत्कार
गुरु जैसा ही करना है जैसा गुरु जी का नमस्कार
और चवर झुलाना आदि आदर सत्कार किया जाता
है तैसा केशों का मजदूर और किसान आदि कैसे कर
सकते हैं क्योंकि मजदूर और किसान लोगों कों सिर
पर बोझ उठाना पड़ता है परन्तु ऊपर लिखी रहत

में केशों का सत्कार गुरू जी के तुल्य ही करना है तो उचित अनुचित बोझ सिक्ख सिर पर (केशों के ऊपर) कैसे उठा सकता है, इसलिये यह रहत भी कोई अमीर सिख ही धारण कर सकेगा ग़रीब नहीं कर सकता। और अमीर भी केशों को दसतार (पग) में भीच कर बांधता है जो गुरू के सत्कार के विरुद्ध है अतः यह रहत किसी से भी नहीं पूरी की जा सकती तो फिर इसको रहतों में सम्मिलित कैसे किया गया इसलिये यह केवल कवि कीं हीं कल्पना है श्री गुरू जी की आज्ञा नहीं सिद्ध होती:

तथा:—गुरमत दर्शन पृष्ट ९० पर लिखे हुये अनुसार एक तर्फ़ यह कहा जाता है कि सूर्य प्रकाश आदि कवियों की वाणी संदेह युक्त मानी जाती है और दूसरी ओर उसी सूर्य प्रकाश की बाणी के प्रमाण से श्री दस्मेश जी की पूर्वोक्त आज्ञा सिद्ध की गई है पता नहीं यह अनियमित व्यवहार क्यों है कारन यह कि केस धरे न मिले हरि पिआरे। यह वाक्य श्री दसमेश जी की अपनी स्वतंत्र उच्चारण की हुई बाणी में से है, और पूर्वोक्त वाक्य, गुरसम अदब केस को ठानहि। उस बाणी में से यहां लिखा

है जिसको ऊपर सन्देह युक्त मानी जाती हैं कहे चुके हैं फिर इससे श्री मुख वाक बाणी का विरोध किया है क्या यहि श्री गुरू जी के प्रेमी होने का निश्चय है।

यदि हठ ही हो कि पूर्वोक्त प्रमाण द्वारा श्री दसमेश जी को केश अत्यन्त पिआरे लगते थे। तो श्री दसमेश जी ने अपनी श्री मुख वाक बाणी बचित्र नाटक के अध्याय १३ में विमुख हूये सिखों के लिये लिखा है कि। मूत्र डार तिन सीस मुन्डाए। अतः यह कबी भी न लिखते, क्योंकि विमुख तो सिख हूये थे उन्हों को कोई और दण्ड दिया जा सकता था परन्तु दसमेश जी को जो सिखों के केश अति प्रिय थे उन केशों का इतना अपमान नहीं करना चाहिये था क्योंकि उनके केशों का कोई दोष भी नहीं था दोष=अपराध था तो उन सिखों का था। इसलिये पूर्वोक्त श्री गुरु जी के अपने मुखार्बिन्द से उच्चार्ण किये हूये प्रमाण में से ही सिद्ध होता है कि श्री गुरु जी की यह आज्ञा नहीं कि बिना शस्त्र केसं नरं भेड जानों। या गुर सम अदब केस को ठानह। आदि

तथा:—पूर्वोक्त प्रमाणों। बिना शस्त्र केसं नरं भेड जानों और बिना तेग केसं दिवो न दिदारे आदि

को कभी ठीक भी माना जाय तो जिन्हों को गुरुघर में सहज धारी सिक्ख कहा जाता है उन्हों के सिर पर केश नहीं होते और वह शस्त्र=किरपाण धारी भी नहीं होते तो उन्हों को इन वाक्यों के अनुसार भेडें ही समझा जा सकता है और श्री गुरु जी के वह दर्शन मात्र के अधिकारी भी नहीं रह जाते यदि ऐसा ही हो तो उन सहज धारी सिक्खों की गुरु घर में शान (पुज़ीशन) क्या हूई और उन्हों को सिक्ख कहलाने का लाभ भी क्या प्राप्त हूआ इस से तो वह हिन्दू ही रहते तो अच्छे थे अत : सहज धारी सिक्खों को होश आ जाना चाहिये यां तो वह केश धारी और शस्त्र धारी सिख हो जायँ और या फिर हिन्दू ही रहना पसन्द करें क्योंकि सहज धारी सिख हो कर भेड़ों की तरह ऊंन ही उत्रवानी है इस से अतिरिक्त और गुरु भक्ति या मुक्ति आदि (बिना तेग केसं दिवो न दिदारे 'आदि वाक्य अनुसार) कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकती ।

(३८) प्रश्न:—क्या तुमको यह पता भी नही कि ग्रन्थाकार तथा कवि लोग किसी भी पुरुष या स्त्री की सुन्दरता के वर्णन करने समय सब से

पहले उन्हों के केशों को नांगां, जंजीरां, और रेशम *की तारे* आदि की शोभा देते हैं। जैसे रामायण ......में श्री रामचन्द्र जी के केशों की यह उपमां करते हैं, चिकने कच कुंचत गभुआरे.... .. महाराज कृष्ण जी के केशों को, कारी कारी अल्कें और नांगन को छौना आदि कह कर उपमां की है।

उत्तरः—कवि लोग शृँगार रस में शोभा प्रत्येक वस्तू की कर देते हैं। तो कवि लोगों की की गई शोभा अनुसार क्या प्रत्येक वस्तू को ही ईश्वर प्राप्ति का साधन और धार्मिक तत्व मान लिया जाय तथा कवि लोग दांतों को भी अनारों के दानों की उपमा देकर लिखते हैं तो क्या जिस पुरुष का दांत दर्द करता हो वह इसलिये दांत ना निकलवावे कि इन दांतों की कवि लोगों ने शोभा की हुंई है और करते हैं और ऊपर कहा हैं कि कवि लोगों ने सिर के केशों की शोभा की है किन्तु बगलों (कच्छां) के बालों की किसी कवि ने शोभा नहीं लिखी। तो कई सज्जन जो बगलों के बाल भी नही मुण्डाते उन्हों को ऐसे बगलों के बाल तो मुण्डा ही देने चाहिये। शेष शोभा भी मन माने की है नहीं तो नाग और जंजीर

मनुष्य के लिये सुखद पदार्थ नहीं हैं तो उनकी शोभा क्या हो सकती है। क्योंकि नाग एक भी हो तो सैकड़ों मनुष्य उससे भय मानते हैं और जिसके हाथ और पाओं में जंजीर डाले हुये हों उसको देखकर भी पुरष भय भीत होते है कि इसने क्या अपराध किया है तो केशों को इन नांग और जंजीरों की उपमां देकर सिद्ध क्या किया जा सकता है। तथा जिस पुरुष के सिर पर केश न हों उसके सिर की उपमां कवि लोग कैसे करते है। यदि गोल मोल चन्द्रमां की शोभा देते है तो फिर ऐसे सिर मुण्डवा कर रखना भी ईश्वर प्राप्ति का साधन और धार्मिक तत्त्व मान लेना चाहिये।

यदि नही माना जा सकता तो केवल कवि लोगों की की गई शोभा मात्र के आधार पर केशो को भी ईश्वर प्राप्ति का साधन या कोई धार्मिक तत्व नहीं माना जा सकता।

और रामायण में श्री रामचन्द्र जी के केशों की उपमां की है तो उसी रामायण में गुरु बशिष्ट जी ने मुण्डन भी कराया लिखा है यथा: चूड़ा करन कीन्ह गुरु जाई। तो रामायण में ही मुण्डन समय केशों की

शोभा समाप्ति भी की गई है। औंर श्री कृष्ण जी की ऊपर आप लिख रहे हैं कि अल्के = जुल्फें कालीं काली थी तो उपमां हो गई परन्तु जब यह अल्कें सफेद हो गई तो फिर कवि लोग इन्हों की उपमाँ क्या करेगें। यदि सफेद रंग की कोई बस्तू कहेंगे तो पहली काली काली और नागन को छौना आदि उपमां तो समाप्ति हो गई और अल्कें भी समाप्ति ही समझो।

(३९) प्रश्नः—श्री गुरु कलगोधर जी के केशों की शोभा भाई नन्दलाल जी इस प्रकार करते हैं।
हर दो आलम कीमते यक तार मूए यार मां।

उत्तरः—प्रेमी जन आपने प्रीतम् पिआरे गुरु और ईश्वर की प्रत्येक वस्तू की इस से भी अधिक उपमां करते हैं और करनी भी चाहिये तथा हम तो श्री गुरु कलगी धर (श्री गुरु गोबिन्दसिंह) जी के चरनों के जूते की भी उपमां करते हैं और श्री मान्य भाई नन्दलाल जी श्री गुरु जी के पूर्ण प्रेमी थे उन्हों ने उपमां की होगी परन्तु प्रश्न तो यह है कि प्रेमी जनों द्वारा की गई उपमां के आधार पर ही आप लोग किसी वस्तू को ईश्वर प्राप्ति का साधन या धार्मिक तत्व निश्चय

करते हैं कि इसमें किसी और श्री मुखवाक प्रमाण या खोज आदि की भी आवश्यकता रखते हैं।

शेष प्रेमी जन अपने प्रीतम के दांतों और नेत्रों की भी उपमां कर देते हैं तो यह नहीं कि नेत्र हीन या दांत हीन गञ्जे मनुष्य धर्मी नहीं हो सकते या इन्हों को ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

(४०) प्रश्नः—और तो और रहा इन्हों केशों की शोभा को देखकर इब्राहीम जैसे मुसलमान फकीरों ने भी केश रख लिये और अमृत छक कर सिंघ सज गए। यथाः सो सतगुर के ढिग चल आयो।...... (सूर्य प्रकाश)।

उत्तरः—यदि सूर्य प्रकाश के रचियता की यह बात सच्च भी मान ली जाय कि इब्राहीम मुसलमान ने केवल केशों की शोभा को देखकर ही पांच ककार आदि सिखी धारण की थी तो यह कोई वजनदार बात नहीं क्योंकि केश एक शरीर के ऊपर चिह्न हैं इन्हों के ऊपर ही मोहित हो जाना परमात्मा प्राप्ति के खोजियों के लिये यहि पर्याप्त नहीं यदि कहा जाय कि वह परमात्मां अथवा अध्यात्म तत्व की प्राप्ति के लिये सिंघ नहीं सजा था तो प्रश्न पैदा होता है कि

उसने किस कामना के लिये श्री गुरु जी को अमृत पान करके अपना गुरु निश्चय किया। यदि परमात्मा प्राप्ति के लिये ही श्री दसमेश जी का शिष्य हुआ है तो केवल केशों की शोभा को देखकर शिषय हो जाना ईश्वर प्राप्ति के जिज्ञासूओं के लिये यह सन्तोष जनक बात नहीं। क्योंकि किसी भी मत में आज तक ना किसे गुरु या अवतार ने केशों को पूर्ण गुरु के लंक्षणों में कोई लक्षण ही माना है और ना ही किसी ने आज तक केशों को कोई परमात्मा प्राप्ति का साधन ही माना हैं।

तथा: गुरु बाणी में भी नाम जपना। सन्तों की संगति 'भक्ति' गुरु प्राप्ति, आदि ही ईश्वर प्राप्ति के साधन लिखे हैं किन्तु केश रखने कहीं भी साधन नहीं लिखे, बल्कि सिक्ख पन्थ में आज कल भी।

गुरमत निर्णय। कृत भाई जोधसिंह ऐम. ए. प्रकाशक लाहौर बुक शाप घण्टा घर लुधिआना सातवीं बार छपे के पृष्ट २६१ पर लिखा हैं कि निरा सिर मुनाणा छोड़ देने से कोई मनुष्य खालसा नहीं बंनता केस ते होर ककार निशानीं उस जीवन की है जो अमृत धारी ने रहत द्वारा बतीत करना है इसलिये

केसा धारी अमृत जरूर छके अते उस जीवन को धारण करे जो रहत विच अंका गया है।

तथाः पृष्ट २९१ पर ही आगे लिखा है कि गुरू का सिख केसां के हँकार कर सिखी न गवावे। केस बाहर की सिखी निशानी सिखी की है सिखी अन्दर होवे दोनों सिखीआं बराबर रहे (चोपासिंह)।

तथा इसी पुस्तक में आगे पृष्ट २९२ पर लिखा है कि बेग रहत जिम बाजी होन। रहत बिना तिम केस मलीन।

तथाः रहत सु केसन को अति भूखन। रहत बिना सिर केस भी दूखन। (देसासिंह) इससे भी सिद्ध होता है कि सिखी कोई और वस्तू है केवल बाह्य केश मात्र ही नहीं जिस लिये ऊपर श्रीमान भाई जोधसिंह जी लिख रहे हैं कि केवल सिर मुण्डना छोड़ देने से कोइ खालसा नहीं बन सकता और उस जीवन को धारण करें जो रहत में अंका गया है।

तथाः गुरु का सिक्ख केशों के हंकार (अभिमान) करके सिखी ना गवावे (नष्ट करे) और रहत बिना तिम केस मलीन। तथा रहत बिना सिर पर केश भी

(दूखन) दुःख रूप ही हैं आदिक से प्रतीत होता है कि रहत = सिखी कोई केशों से भिन्न है ।

यदि यहि आग्रह किया जाय कि इब्राहीम जैसे केवल केशों की शोभा देखकर ही श्री दसमेश जी के सिंघ सज गए थे तो आज कई लाख सिंघों के केशों की शोभा को देखकर हिन्दुस्तान के मुसलमान क्यों नहीं सिंघ सज गए । अतः श्री दसमेश जी में इब्राहीम ने कोई और शक्ति या दैवी गुण अथवा विद्वता आदि देखे होंगे तब ही अपना मुसलमान धर्म परिवर्तन करके उन्हों के सिक्ख बन गए माना जा सकता है । नहीं तो केवल केशों की शोभा को देख कर मुसलमान धर्म को त्यागना नहीं माना जा सकता क्योंकि केश तो वह मुसलमान धर्म में रहता हुआ भी अपनी इच्छा से धारण कर सकता था ।

(४१) प्रश्नः— अब आप ही बताएँ कि केशो के बिना किसी रोडे भोडे सिर की उपमां भी किसी ग्रन्थ में देखी है, उसका कारन यहि है कि रगड़े हूये सिर को सिर गुम्म या रोडा भोडा अर्थात कोना मोना अथवा कद्दू जैसा या आखरी टिण्ड जैसा सिर कहने से अधिक उपमां देनी कठन है, हां सूर्य प्रकाश के कर्त्ता

श्री मान भाई सन्तोषसिंह जी यह पदवी (दर्जा) जरुर देते हैं यथा: सुन्दर स्वरूप ते करूप बन रोडे होत .... पाक मुख मूण्ड कै निपाक कों फिरावें नित आगे कर देत जैसे रांड कों कर्म है, सोभा लोक गत प्रलोक की बिगारे मूढ मुण्डन कराए फिर भाखते धर्म हैं (गुरुमतदर्शन पृष्ट १०५)

उतर:—गोपी चन्द के मुण्डे हूये सिर की उपमां लिखी है कि । सिर मुन्निआ सोंहवदा चन्द वांगू बैठा अंग विभूति लगा लोको, अतः रोडे भोडे सिर की उपमां क्यों नहीं देखी वह कौनसी वस्तू है जिसकी कवि लोग उपमां नही लिख सकते और तुम ने जो सिर गुम्म रोडा भोडा कोना मोना कद्दू जैसा आदि टिच्चकरें लिखी है ऐसी वैसी टिच्चकरें केश धारियों के ऊपर भी अनन्त लिखी जा सकती हैं पर हमने लिखनी नहीं क्योंकि यह सभ्यता से बाहर है और कोई सुनना चाहे तो सामने आकर सुन सकता है और पूर्वोक्त गुरमत दर्शन के कर्त्ता का मुण्डे हूये सिरवालों के साथ कोई मन से ही विरोध होगा परन्तु हमारा केश धारियों के साथ कोई मन सें विरोध भी नहीं इसलिये भी हम कोई केश धारी सज़्जनों के सिरों की

टिच्चकर नहीं लिखना चाहतें शेष रही सूर्य प्रकाश के कर्त्ता की बात इसके लिये गुरमतदर्शन के कर्त्ता अपने पुस्तक के पृष्ट २५ पर ही जब लिख रहे हैं कि जो प्रमाण श्री मुखवाक वाणी अनुकूल हो वह प्रमाणिक मानते हैं और जो प्रति कूल हो उसको लिखारी की भूल या चतुर विरोधियों की ओर से मिलावट आदि समझकर त्याग देते हैं। तो यहां पर चाहिये था कि पूर्वोक्त सूर्य प्रकाश के प्रमाण की पुष्टि के लिये कोई श्री मुखवाक बाणी का प्रमाण प्रकट करते जिसमें यह लिखा हूआ होता कि सिरका मुण्डन कराना वेश्या धर्म है या अधर्म है प्ररन्तु ऐसी श्री मुखवाक बाणी तो कहीं है नहीं। तो पूर्वोक्त केवल कवि की कल्पना को लिखारी की भूल या मिलावट आदि कारन समझकर त्यागने का प्रयत्न क्यों नहीं किया

तथा:—यदि निष्पक्ष हो कर (न्याय दृष्टि से) देखा जाय तो सिर और मुख का मुण्डन कराने से करूपनहीं हो जाता। यदि हो जाता हो तो महात्मा गांधी और श्री जवाहर लाल आदि नेताओं के सिर पर केश और मुख पर दाढ़ी नहीं है परन्तु उन्हों का अपने देश और

विदेशों में भी कितना स्वागत आदर हो रहा है यदि वह करूप होते तो ऐसा कभी न होता किन्तू मनुष्य करूप भृष्टाचार से होता है। केश मुण्डवाने या रखने से नहीं हो सकता। शेष पूर्वोक्त सूर्य प्रकाश के कर्त्ता ने जो लिखा है कि। पाक मुख मूण्ड के निपाक को फिरावें नित। यह भी ठीक नहीं क्योंकि निपाक का अर्थ यहां पर उस्तरा ही होगा जो नित्य फिराते हैं किन्तू उस्तरा लोहे का ही होता है लोहा कभी निपाक=अपवित्र नहीं हो सकता यदि हो भी जाय तो मार्जन कर धोने से फिर पवित्र हो जाता है और जो लिखा है कि आगे कर देतें जैसे रांड को कर्म है, यह भी ठीक नहीं क्योंकि इसका तात्पर्य यहि हो सकता है कि दाढ़ी मुण्डाने वाले सज्जन अपना मुख आगे कर देते हैं जैसे रांड वेश्या आगे कर देती है। किन्तू वेश्या विषय भोग के लिये आगे करती है परन्तु दाढ़ी मुण्डाने वाले सज्जन अपने मुख की सफाई के लिये मुख आगे करते हैं।

और ऊपर जो लिखा है कि, शोभा लोक गत प्रलोक की विगारे मूढ़। यह भी ठीक नहीं क्योंकि प्रलोक में यह शरीर साथ ही नहीं जा सकता यहां

ही दग्ध हो जाता है तो प्रलोक में यहां की दाढ़ी मुण्डन की गई की शोभा=सुन्दरता अरुप जीव की कैसे बिगड़ जाती है, यह सब बातें सार हीन हैं शेष इस लोक की शोभा बिगड़ जाती हो तो श्री महात्मा गांधी और श्री जवाहरलाल आदिकों की मूर्तिएँ=फोटो घर-घर में आज बिराजमान हैं तथा श्री रामचन्द, कृष्ण भगवान शिव जी महाराज की फोटो (मुर्तिएँ) भी लोग बहुत प्रसन्नता पूर्वक घरों में शोभा बड़ाने के लिये रखते हैं जो उन्हों में से किसी की फोटो में दाढ़ी नहीं होती इसलिये पूर्वोक्त सूर्य प्रकाश के कर्त्ता का कथन अत्यन्त पक्षपात=अन्याय युक्त है। और अनुभव (तजुर्वे) के विपरीत है,

शेष ऐसे कहने मात्र से ही केश रखने ईश्वर प्राप्ति का साधन नहीं माने जा सकते। बल्कि श्री भाई गुरदासजी अपनी वार ३६ में लिखते हैं कि वाल वधाइऐ पाईऐ वड़ जटा पलासी। भाव वाल= केश वधाइऐ=वड़े करने से यदि परमात्मा प्राप्त हो सकता हो तो वड़=बट की जड़ह बहुत बड़ी लम्बी लटकती हैं अतः बट को परमात्मा की प्राप्ति होनी चाहिये।

(४२) प्रश्नः—जैसे केशों का कटाना ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध है तैसे केशों का बढ़ाना भाव जटा आदि धारण करनी भी मन मत है इसलिये इस तुक में जटा की ओर इशारा=(सैन) है केशों की ओर नहीं जैसे कि भैरों महला ५ में हुकम है। जटा मुकट तन भसम लगाई बस्त्र छोड तन नग्न भया। राम नाम बिन तृप्त ना आवे कृत के बांधे भेख लया। श्री दसमेश जी बचित्र नाटक में भी कथन करते हैं। करमों नख सिर जटा सवारी...........

उत्तरः—केशों का कटाना अगर ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध है तो ऐसे फिर हाथ और पाँव के नख भी कटाने ईश्बरीय नियमों के विरुद्ध हो सकते हैं।

तथाः गर्मी में पंखा झोलना और सर्दी (ठण्डी) में रजाई कम्बल ऊपर लेना भी ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध हो जाता है क्योंकि गर्मी सर्दी ईश्वर की ओर से पैदा होती है तो उसको भी सहिन करना चाहिये और केशों को कंघा फेरना भी ईश्वर के नियमों के विरुद्ध है यदि कहा जाये कि कंघा केशों की सफाई के लिये फेरा जाता है तो केश भी सिर की सफाई के लिये ही कटाए जाते हैं यदि केशों को काटना

ईश्वरीय नियमों के बिरुद्ध है तो जब कंघा फेरा जाता है तो कई केश टूट जाते हैं । और कई उखड़ जाते हैं तो कंघे के साथ केशों का टूटना या उखड़ना ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध कैसे नहीं होता । क्योंकि ज़व यह अनुभव हो गया है कि कंघा फेरने से केश टूटते और उखड़ते हैं तो फिर नहीं फेरना चाहिये । कंघा ना फेरने से केश स्वयं जटा बन जायँगे जिन जटा धारण को ऊपर प्रश्न में मनमत कहकर आपने खण्डन किया है ।

और केशों को ऊपर ले जाकर जूड़ा बांधना भीं ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है क्योंकि वह भी ईश्वर ने नहीं बांधा यह भी मनुष्य की अपनी तर्फ से केशों को सम्भालने की योजना और तरकीब है इसलिये ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है क्योंकि ईश्वर के नियम के पालन का अर्थ यह है कि जो कुछ ईश्वर करे उसी पर प्रसन्न रहना । अपनी तर्फ से उसके ऊपर कोई व्यवस्था (तरकीब) ना कायम करनी अतः ईश्वर इच्छा से केश नीचे को जाते हैं तो उनको ऊपर ले जाकर बांधना भी ईश्वर के साथ मुकाबला करना सिद्ध हो जाता है ।

तथा: ईश्वर ने पैदा होते ही पहिले दूध पिलाया था तो फिर पीछे अनाज भी नहीं खाना चाहिये और ईश्वर ने मनुष्य को पहिले नग्न ही पैदा किया है तो ऐसे फिर मनुष्य को बस्त्र पहरने भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध हैं बल्कि भेड़ बक्करी की ऊन = जत्त मूण्डणी भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध हो जाती है, और शहतूतों की शाखें काटनी खेती में से सूड़ = पोहली भोगाट प्याजी आदि काटनी भी कुदरत के विरुद्ध है, क्योंकि उसको कुदरत ने पैदा किया है ।

और खेती में से घास खोद कर सफाई करनी भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है वह भी ईश्वर ने ही पैदा किया है । और ईश्वर ने साफ = मैदान पृथवी बनाई है उसको खोद कर कूआं तालाब बनाना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है ।

हवाई जहाज, रेल, रेडियो आदि ईश्वर ने नहीं बनाए तथा शरीर में से कोई फोड़ा फुन्सी पैदा हो जाय तो उसको डाक्टर से चिराना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है क्योंकि उसको भी ईश्वर ने पैदा किया है । बल्कि किसी रोग का इलाज कराना ही ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है और बक्करे मुर्गी

(कुकड़ी) को काटना (झटका करना) भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है क्योंकि ईश्वर ने उनके सिर गर्दन के साथ जोड़े है किसी मनुष्य ने नहीं जोड़े । तथा ऐसा तैं जग भरम लाया, कैसे बूझै जब मोहया है माया (श्री राग कबीर जी) वाक्य अनुसार भ्रम=अज्ञान भी ईश्वर ने ही जीव को लगाया है तो इस अज्ञान को दूर करने के लिये ज्ञान का प्रकाश करना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है किन्तू सब ही वेद शास्त्र गुरु पीर सन्त महात्मा अज्ञान दूर करने के लिये कटि बद्ध हो रहे हैं, और दसो गुरु साहिब भी भ्रम=अज्ञान दूर करने के लिये ही संसार में आए थे परन्तु यह है परमात्मा से विरोध क्योंकि ईश्वर कृत वस्तू को गिराना ही ईश्वरीय नियम भङ्ग करना है ।

यदि कहा जाय कि अज्ञान मोह आदि जीव कृत है तो जीव कृत वस्तू सब संसार के पशू पक्षी आदि जीवों पर प्रभाव नहीं डोल सकती परन्तु अज्ञान मोह का सब संसार के जीवों पर प्रभाव है, अतः केवल केशों का काटना ही ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध नहीं किन्तू और भी बहुत कुछ हैं, शेष केशों का बढ़ाना जटा आदि धारण करनी यदि मनमत है तो क्या फिर

केशों का घटाना गुरु मत हो सकेगी। और पूर्वोक्त भाई गुरुदास जी के कहे हुये वाक्य में जटा की ओर इशारा कैसे है क्योंकि उसमें पाठ ऐसे है, वाल वधाइऐ पाईऐ, तो वाल पद का अर्थ जटा कैसे हो सकता है कारन यहि कि केस पद का अर्थ भी पीछे आप जटा ही कर आए हैं तों यहां पर वाल, पद का अर्थ भी जटा ही करते हो तो जिन केशों के रखने के लिये आप शास्त्रार्थ कर रहे हैं उन केशों के लिये कौन सा पद या शब्द किसी ग्रन्थ में हैं जिसको प्रकट करके अपना पक्ष सिद्ध करोगे

और पूर्वोक्त। जटा मुकट तन भस्म लगाई, तथा: कर मों नख सिर जटा सवारी, बाणी में पाठ स्पष्ट जटा है वाल या केश नहीं किन्तू यहां पर इस, वाल वधाइऐ, वाक्य में वाल पद को अर्थ भी जबरदस्ती जटा ही करते जाना केवल पक्षपात=अन्याय है और जटा मुकट तन भस्म लगाई। आदि बाणी में भीं दम्भ और अभिमान का ही खण्डन है और किसी भेष मात्र का नहीं। यदि आग्रह ही किया जाए तो। राम नाम बिन तृप्त न आवे। वाक्य अनुसार जब शारीरिक भेष मात्र कायम कर लेने से राम नाम से बिना तृप्ति

नही हो सकती तो सिख पन्थ में भी केवल शरीर पर पांच ककार आदि धारण करने से ही कैसे तृप्ति मानी जा सकेगी, यदि राम नाम से बिना सिख पन्थ में भी तृप्ति नहीं मानी जा सकती तो पूर्वोक्त केवल शरीर पर भस्म लगा करके सिर पर जटा धारण करने से ही तृप्ति नहीं हो सकती कहने मे फिर केवल जटा आदि का धारण करना ही कैसे खण्डन हों गया, फिर तो शरीर पर प्रत्येक धारण किये गए भेष मात्र का ही खण्डन हो गया

यदि कहा जाय कि । करमों नख सिर जटा सवारी, आदि प्रसङ्ग में दत्ता त्रेव, शिवजी, विष्णु, ब्रह्मा, रामा नन्द, मुहम्मद आदिकों का गुरु जी ने खण्डन किया है केवल दम्भ मात्र का नहीं तो यहां पर प्रश्न होता है कि श्री दस्म गुरु जीने वहां पर क्या दोष दिखाकर खण्डन किया है इसका उत्तर भी उसी प्रसङ्ग में से यह दिया जा सकता है कि, महादेव अच्युत कहवायो, बिसन आप ही को ठहरायो, ब्रह्मा आप पार ब्रह्म बखाना, प्रभू कों प्रभू न किन्हूं जाना:८ ब्रह्मा चार ही वेद बनाए, सर्व लोक तिह कर्म चलाए, १९ तब हरि बहुरि दत्त उपजायो, तिन भी अपना

पन्थ चलायो, कर मों नख सिर जटा सवारी, ···२३ ···पुन हरि रामा नन्द को करा। भेस वैरागी को जिन धरा।

कण्ठी कण्ठ काठ की डारी। प्रभ की क्रिया न कछू बिचारी २५ महादीन तब प्रभ उपराजा। २६ ....तिन भी एक पन्थ उपराजा। सभ ते अपना नाम जपायो, सतनाम काहू न द्रिढ़ायो, २७ पूर्वोक्त सब में यह दोष कहे हैं कि इन सब महां पुरूषों ने अपने अपने पन्थ चलाए हैं और इन्हों ने अपना ही नाम जपवाया है परमात्मा का नाम किसी ने नहीं द्रिढ़ाया।

अब इस कसौटी पर यदि परखा जाए तो सिक्ख पन्थ में यह प्रचार ज़ोर शोर से किया जाता है कि श्री गुरू गोबिंदसिंह जी ने तीसरे खालसा पन्थ की उत्पति की हैं। जब श्री दसमेश जीं ऊपर कहे अनुसार दत्ता त्रेव, रामानन्द और मुहम्मद आदकों का खण्डन इसलिये करते हैं कि इन्हों ने अपने अपने पन्थ चलाए हैं तो श्री दसमेश जी आप अपना तीसरा पन्थ कैसे चला सकते थे यहां पर तो ऐसे सिद्ध होता है कि श्री दसमेश जीने पांच ककार आदि धारण करवा कर

खालसा पन्थ की उत्पति (साजना) नहीं की क्योंकि पूर्वोक्त मुहम्मद रामानन्द आदकों का गुरु जी ने खन्डन इसीलिये किया है कि उन्होंने अपने पन्थ चलाए हैं तो आज खालसा पन्थ श्री गुरू गोविन्दसिंह जी के नाम पर ही चल रहा है तो ऐसे नही हो सकता कि गुरू जी कहते कुछ और थे किन्तू करते कुछ और थे। यदि कहा जाय कि ऊपर कहे हुये पांच ककार कुदर्ति चिह्न हैं इसलिये पूर्वोक्त पन्थों के चिह्नों के तुल्य नहीं तो रामानन्द ने कण्ठो कण्ठ काठ की डारी है तो खालसा पन्थ में काठ (लकड़ी) का कंघा और लोहे का कड़ा तथा वस्त्र का कच्छा आदी भीं ककार हैं जो आप बनाए जाते हैं कुदर्ति चिह्न नहीं हैं, अतः चार ककार कुदर्ति चिह्न नहीं हो सकते।

यदि ककारों बाबत कोई हठ (आग्रह) किया जाय तो भी हिन्दू, मुसलमानों से अलग जब तीसरा खालसा पन्थ स्थापित किया मानते हैं तो पूर्वोक्त श्री दसमेश जी के वाक्यों रूपी कसौटी के फिर भी विरुद्ध है क्यों कि पूर्वोक्त मुहम्मद आदकों का खण्डन भी तिन भीं एक पन्थ उपराजा, आदि एकपन्थ कायम करने करके ही किया है।

शेष पूर्वोक्त विष्णु आदकों ने आप को पार ब्रह्म कहा है तो इस ओर। जोति रूप हरि आप गुरू नानक कहायो, (सवईये) वाक्यानुसार श्री गुरु नानक देव जी भी साक्षात आप जयोति स्वरूप हरि=परमात्मां ही कहाए सिद्ध होंते हैं। यदि कहा जाय कि श्री गुरू सहिबों ने अपना नाम नहीं जपवाया तो यह भी आज देखने में ऐसे नहीं आ रहा क्योंकि प्रत्येक कामना के लिये दसों गुरू सहिबों की भी ईश्वर के साथ तुल्य ही अराधना की जाती है बल्कि मुक्ति के लिये भी दसों गुरू सहिबों का भी साथ ही ध्यान और सुमरन, प्रार्थना आदि किये जाते हैं इसलिये ऊपर कथन किये श्री दसमेश जी के, सभ ते अपना नाम जपायो, वाक्य रूपी कसौटी के यह भी अनुकूल नहीं और ब्रह्मा ने चार वेद बना कर कर्मों में सब लोगों को लगा दिया है तो गुरमत दर्शन के कर्ता ने आपने गुरमत दर्शन के पृष्ट १८३ पर लिखा है कि गुरबाणी में प्रमार्थ और व्यवहारिक दोनों पक्ष हैं तो गुरु बाणी में व्यवहारिक पक्ष ऊपर कथन किए ब्रह्मा के चलाए हुये कर्मों से क्या कम दर्जा रखता है।

शेष केश रखने ही यदि गुरू घर का सिद्धाँत होता

तो गुरू अमरदास ज़ी मलार की वार में, इक जैनी उभ़ड़ पाय, शब्द में जैनियों के लिये, हथीं सिर खुहाए न भद कराया। कभी ना लिखते कि हाथों से सिर खुहाते हैं किन्तु भद (मुण्डन) ही क्यों नहीं करवाया।

(४३) प्रश्नः—जैनियों को इसलिये बुरा नहीं कहा कि वह मुण्डन नहीं कराते उल्टा मल मूत्र विष्टा आदि गृहण भाव कुचील रहन और केश पुटवाने से बुरे कहे हैं, जैसे कि माझकी वार में भी ज़ैनी सरेवड़े आदकों के लिये कहा है कि। भेडां वाँगीं सिर खुहाइन भरीअन हथ सुआही.....

उत्तरः—माझको वार के इस शब्द में तो इन जैनी सरेवड़ों के लिये। सदा कुचील रहहि दिन राती मथे टिके नाही। ओनां पिण्ड न पत्तल क्रिया न दीवा मुए किथाऊ पाही। आदि भो लिखा है अतः यदि सदा कुचील रहने करके ही जैनियों को बुरा (नीच) कहा होता तो फिर, मथे टिके नाही। क्यों कहा और उन्हों के पिण्ड पत्तल क्रिया दीपक आदि न करने के लिये भी क्यों कहा। इसी से साबत होता है कि श्री गुरु जी माथे पर तिलक लगाते थे और पिण्ड पत्तल क्रिया दीपक आदि करने में रुची रखते थे यदि श्री

गुरु जी पूर्वोक्त पिंड पत्तल आदि करने के और तिलक आदि लगाने के विरुद्ध होते तो जैनियों के भी इन कर्मों के न करने से घृणा प्रकट न करते। क्योंकि मनुष्य जो कर्म आप नहीं करना चाहता वह कर्म करने के लिये दूसरे को नहीं कह सकता, किन्तू उस कर्म के करने के लिये ही दूसरे मनुष्य को प्रेरना करता है जो आप करता हो और दूसरे सनुष्य के न करने से घृणा प्रकट भी तब करता है जब उस कर्म को वह आप करता हो, तैसे श्री गुरु जी यदि केश मुण्डाने के विरुद्ध थे तो फिर पूर्वोक्त शब्द में पाठ । न भद कराया । कभी नहीं थे लिख सकते फिर तो लिखते क्यों नहीं केश रखाते, इसलिये सिद्ध होता है कि गुरु जी केश रखने के पक्षपोषक नहीं थे

और ऊपर किये गए प्रश्न में ही कहा है कि इस निन्द कर्म पर घृणा प्रकट करते हूये श्री गुरु जी फुरमाते हैं । हथीं सिर खुहाइ न भद कराया, तो आप के निश्चय अनुसार गुरु जी को जब मुण्डन कराना भी निन्द्य कर्म ही था तो मुण्डन कर्म पर भी यहां गुरु जी ने घृणा प्रकट क्यों न की, उल्टा न भद कराया, कह कर मुण्डन की ओर ही क्यों प्रेरणा की,

अतः हाथों से केश उखाड़ने ही गुरु जी के निश्चय के विरुद्ध कर्म था किन्तू मुण्डन कराना नहीं । और इस शब्द में जो कर्म गुरू जी आप नहीं करना चाहते थे उन कर्मों के करने से घृणा प्रकट की है और जो कर्म गुरू जी आप करना चाहते थे उन कर्मों के न करने से भी घृणा प्रकट की है, जैसे गुरू जी कुचील नहीं थे रहना चाहते और उन्हों के कुचील रहने पर घृणा प्रकट की है तथा गुरू जी आप तिलक स्नान आदि करना चाहते थे तो उन्हों के तिलक स्नान आदि न करने से भी घृणा प्रकट की है । तैसे यहां पर हाथों से केश उखाड़ने पर गुरू जी को घृणा थी तो कहा, हथीं सिर खुहाइ, और मुण्डन से घृणा नहीं थी तो कहा, न भद कराया ।

(४४) प्रश्नः— जिन निर्पक्ष विद्वानों ने इस टीके (फरीदकोट वाले) को आदि से अन्त तक देखा है वह तो आगे ही जानते हैं कि इस टीके पर पौराणिक रङ्ग चड़ा कर अनेकों जगह गुरमत सिद्धांतों पर परदा पाया हूआ है....:इस टीके की सुधाई के लिये नियत किये गए विद्वानों में से पण्डित बालकराम और टीका कार ज्ञानी बदनसिंह जी का अर्थों के ऊपर

इतना मत भेद हुआ कि पण्डित जी कुपित होकर चले गए महाराजा सहिब जीने कई यत्न किये परन्तू ना आए. . . .किन्तू पण्डित जी ने अपने भाई को यह उत्तर दिया कि मैं ऐसे टीका कार का मुख भी नहीं देखना चाहता: (गुरमत दर्शन पृष्ट १०७–१०८)

उत्तर:—यहां पर प्रश्न होता है कि श्री गुरु ग्रन्थ सहिब जी के टीके फरीद कोट वाले पर पौराणिक रंग चढ़ा कर किसने परदा पाया था। क्योकि पूर्बोक्त सम्पूर्ण लेख में पौराणिक रंग चढ़ाने वाले एक पंडित वालक राम जी ही प्रतीत होते हैं जो कुपित होकर चले गए आप ही ऊपर मान रहे हैं। शेष ज्ञानी बदन-सिह जी और अन्य भी टीका करने वाले सबही ज्ञानी सिक्ख हो थे उन्हों ने तो पौराणिक रंग चड़ाना ही नहीं था।

यदि कहा जाय कि पण्डित बालकराम जी अकाली पन्थ के पक्ष पोष्क थे तो यह बात मिथ्या है क्योंकि पण्डित बालकराम ज़ी का हरिद्वार में गुरु मण्डल आश्रम है जिसमें श्री ठाकुर मूर्ति की पूजा विधि सहित दोनों समय श्री मान्य पण्डित बालकराम जी की आज्ञा अनुसार होती रही और अब भी होती

है जिस मूर्ति पूजा के आज अकाली बिरुद्ध हैं और पण्डित बालकराम जी मुण्डन भी कराते थे यह बात सबही उदासीन भेष में प्रसिद्ध थी और है तथा: पण्डित बालकराम ज़ी का सनातन सिद्धांतों के पक्ष को लेकर ही ज्ञानी बदनसिंह जी के साथ अर्थों पर मत भेद था जिससे कुपित होकर चले गए थे, पण्डित जी राम की जगह राम और नारायण की जगह नारायण ही अर्थ लिखना चाहते थे परन्तु ज्ञानी जी ने राम की जगह भी वाहिगुरु और नारायण की जगह भी वाहिगुरु अर्थ ही लिखा। शेष बहुत ज्ञानियों की सम्मति होने से बहुत खुली मन मानी नहीं कर सके जो एक ही होने से कर सकते थे। इसलिये आज कल के एक एक ज्ञानी के किये टीकों से कुछ अच्छा हो चुका है क्योंकि आजकल के टीकों में केवल पक्ष पात का ही रंग है,

(४५) प्रश्न:—श्री मुखवाक बाणी द्वारा कथन किये। साबत सूर्त दसतार सिरा। और केसां का कर बीजना सन्त चउर ढुलावउ। तथा: केसां का कर चवर ढुलावां। अथवा: केस संग दास पग झारउ। आदि अनेकों वाक्यों से जब दसों पातशाह साबत सूर्त

केश धारी सिद्ध होते हैं तो श्री गुरू अङ्गद देव जी की ओर से मुण्डन कराने की आज्ञा देने वाला इतिहासक प्रमाण कहां तक प्रमाणिक हो सकता है।

उत्तरः—गुरू अंगद देव जी की ओर से मुण्डन कराने की आज्ञा देने वाला प्रमाण उसी सूर्य प्रकाश का है जिस सूर्य प्रकाश के प्रमाण द्वारा श्री दसमेश जी की सिक्खों के लिये केश धारण करके आने की आज्ञा (इसी के पीछे प्रश्न नम्बर २४ में) आपने सिद्ध की है।

यदि गुरू अङ्गद देव जी की ओर से मुण्डन कराने की आज्ञा सूर्य प्रकाश का प्रमाण इतिहासक होने से प्रमाणिक नहीं तो श्री दसमेश जी की ओर से केश रखने की आज्ञा वाला इसी सूर्य प्रकाश का इतिहासक प्रमाण होने से कैसे वहां पर आपने प्रमाणिक मान लिया है, शेष श्री मुखवाक वाणी के जो प्रमाण आपने पूर्वोक्त प्रकट किये हैं उन्हों में से किसी का भी यह अर्थ नही कि दसो गुरू सहिब केश धारी थे या सिक्खों को केश धारण करने की आज्ञा है।

साबत सूतं दस्तार सिरा, का अर्थ पीछे इसी के

प्रश्न नम्बर २३ में हो चुका है वहां देखो और केसां का कर बीजना या केसां कर चवर झुलावां तथाः केश संग दास पग झारउ। इन तीन ही वाक्यों में कोई केश रखने का विधान नहीं किन्तू गुरु सहिब जी ने अत्यन्त निम्रता और सेवा भाव का उत्साह प्रकट किया है जैसे, तन मन काट काट सभ अर्पी विच अग्नि आप जलाई, तथाः अखी काढ धरी चरणी तल सभ धर्ती फिर मत पाई। (सूही महला ४ अष्टपदि) आदि वाक्यों में श्री गुरू रामदास जी ने शरीर (तन) को काटना और अग्नि में ज़लाना तथाः अखी (नेत्रों) को भी निकाल कर चरनों के (तल) नीचे रखने का भाव प्रकट किया है तो क्या इसका अर्थ यहां पर यही लिया जाएगा कि सिक्खों को गुरू जी की यह आज्ञा है कि तुम अपने शरीर को काटकर अग्नि में जला दो और नेत्रों को भी निकाल कर चरनों के नीचे रख दो यदि ऐसे ही हो तो सब ही सिक्ख नेत्र हीन=सूरमेंसिंह होंगे और कोई सिक्ख जीवत रह ही नहीं सकताः अतः यहां पर यह तात्पर्य नही किन्तू सेवा प्रेम का भाव ही प्रकट किया है तैसे ही पूर्वोक्त वाक्यों में भी केसों का पंखा और चवर बना कर झुलाने का तात्पर्य

नहीं किन्तू सेवा का भाव ही प्रकट कियाहै। जैसे श्री फरीद भक्त ने भी कहा है कि पैरी थका सिर जुलां जे मूं पिरी मिलंन। श्लोक १२० भाव पाँओं से चलता हुआ थकित हो जाऊँ तो सिर नीचे करके सिर से (ज़ुल्लाँ) चल पड़ू यदि मुझको पिआरा मिल सके। किन्तू सिर नीचे पृथवी कों लगा करके एक फुट भी नहीं चला जा सकता परन्तु फरीद जी ने सिर नीचे करके चलना कहा है तो इसका भाव भी अति प्रेम ही प्रकट किया है तैसे केशों का कर बीजना आदि वाक्यों में भी अति प्रेम ही प्रकट किया है किन्तू केश धारण करने या केशों का पंखा आदि बनाना ही तात्पर्य नहीं।

यदि कोई आग्रह ही किया जाय तों केशों का पंखा या चवर बिनां केशों के काटने से कैसे बन पाएगा यदि केशों के काटने से ही बन सकेगा तो आयू प्रयन्त केश काटने ही नहीं यह नियम कैसे सिद्ध किया जा सकेगा, और साथ ही यह भी सिद्ध होगा कि (सन्त चउर ढ़लावउ) सन्तों को केशों का चवर झुलाना ही केश रखने का लाभ है और कोई नहीं यदि कहा जाए कि केश काटकर चवर आदि नही

बनाने किन्तू सिर ही सन्तों के ऊपर झुलाना है तो यह भी गुरसिक्खों के लिये पीछे बताया गया है कि रहत नामों के सार में लिखा है कि वाहिगुरु जी का खलसा केस हरे करन और कंघा करन के बिना केस नङ्गे न रखे । और आप पीछे लिख आए हैं कि । गुरसम अदब केस को ठानहि । तो जब केश हरे करने और कंघा करने से बिना सिक्ख केश नग्न ही नहीं रख सकता तो सन्तों के ऊपर केश नग्न करके और खोहल कर कैसे चवर आदि झूला सकता है और गुरु के तुल्य ही जब केशों का अदब = सम्मान करना है तो । केस संग दास पग झारउ । वाक्य अनुसार दासों के पॉओं अपने केशों से गुर सिक्ख कैसे झाड़ेगा क्या गुरु का सम्मान सिक्ख के लिये यही कुछ होगा । अतः आजकल का गुर सिक्ख किसी विद्धि से भी पूर्वोक्त लिखे वाक्यों अनुसार केशों का पंखा या चवर आदि नहीं झूला सकताः इसलिये पूर्वोक्त श्री मुखवाक्यों में केवल प्रेम ही प्रकट किया है केश रखने या न रखने का अभिप्राय नहीं ।

शेष ऊपर लिखे हूये प्रमाण चारों ही महले पांचवें के है तो उन प्रमाणों से पांचवें गुरू से बिना नौं

गुरु सहिब केश धारी कैसे सिद्ध हूये क्योंकि पीछे प्रश्न में लिखा है कि दसो पातशाह साबत सूर्त = केश धारी सिद्ध होते हैं तथा श्री गुरु तेगबहादर जी ने कहा है कि। चोटी काल गही। चोटी का अर्थ बोदि होगा यदि केश होते तो केस काल गहे, आदी कोई पाठ लिखते किन्तू शेष केश न होने से ही चोटी हो सकती है

यदि कहा जाय कि पांचवें गुरू जी के केश तो सिद्ध होते ही हैं क्योंकि यदि न होते तों। केसां का कर चवर ढुलावाँ। आदि वाक्य न लिखते। तो प्रेम भाव में आकर ऐसे वाक्य लिखे जाते हैं जिन्हों का अर्थ वस्तू अपने पास नहीं भी होती जैसे एक शिष्य गुरू के लिये लिख रहा है कि, तीनों लोक मैं करुं कुरबांन सत्यगुर, यदि विचार किया जाएतो उस शिष्य की मलकियत जब एक गांव की भी नहीं तो तीनों लोक कुरबांन कैसे कर सकता है क्योंकि कुरबान = न्योछावर वहि वस्तू की जा सकती है जिस वस्तू पर अपना अधिकार हो अतः प्रेम भाव में यह नियम नहीं रहता कि वहि वस्तू सेवा के लिये कही जा सकती है जिस पर अपना अधिकार ही हो किन्तू जो वस्तू पास न भी हो उसका भी कथन हो

सकता है और यदि आग्रह ही किया जावे कि पूर्वोक्त प्रमाणो में केश सिद्ध होते हैं तो भी सन्तों की सेवा के लिये सिद्ध हूये जो केश उन केशों के जिन्होंने आजतक चवर आदि नहीं बनाए तो वह उनके केश व्यर्थ ही सिद्ध हूये ।

(४६) प्रश्नः—दसों पात शाहों का केशधारा होना तो कहीं रहा जब मरदाना भी नुरू नामक गड्डरिये को यह उपदेश देता है कि तीन बातें तुम करो तेरा राज होगा सिर पर केश रखने । पीछल रात्रि सत नाम का जाप जपना । आते जाते साधू सन्त की सेवा करनी ।

उत्तरः—जान पड़ता है यह प्रमाण आपने भाई मनी सिंह की जनम साखी का मुख्य समझ कर प्रकट किया है क्योंकि भाई बाले वाली जनम साखी आदकों का आप स्वयं खण्डन करते हैं, अब देखना यह कि यह प्रमाण भी गुरुबाणी के अनुकूल है या नहीं यदि अनुकूल नहीं तो इस प्रमाण का त्याग करना पड़ेगा और यदि अनुकूल है तो गुरुबाणी में यह कहां लिखा है कि जो पुरुष ईश्वर का नाम सुमरन करे और आते जाते सन्त साधू की सेवा करे वह पुरुष साथ केश भी अवश्य ही धारण करे । यदि ऐसे गुरुबाणी में कहीं

नहीं लिखा तो पूर्वोक्त मरदांने की ओर से शिक्षा कथन करनी श्री मुख वाक बाणी के विरुद्ध होने से यह कुछ महत्व नहीं रखती । शेष यदि विचार किया जाय तो भी यह बात ठीक नहीं जचती क्योंकि यदि सत-नाम के जाप आदि के साथ राज प्प्ति के नमित्त केश रखने भी आवश्यक हों तो आज जो पुरुष केशों के बिना हैं परन्तु उनमें भी कोई राजे हैं वह नहीं होने चाहिये तथा जो सिक्ख आज केशधारी भी हैं और सतनाम का जाप भी जपते हैं और सन्तों की सेवा भी करते हैं तो फिर भी वह कई धन हीन ही है राजे नहीं बने तो उन्हों के लिये यह प्रमाण कैसे प्रमाणिक होगा यदि कहा जाय कि मुक्ति रूपी राज प्राप्त होता है तो ऐसे फिर जो गंजा (केश हीन) पुरुष हो उसकी मुक्ति केवल सतनाम के जाप और सन्तों की सेवा करने से कैसे होगी अतः यह अनियमित सिद्धांत है । यदि कहा जाए कि मरदांने ने उसको वर दिया है तो उसी को ही केश रखने आदि से राज प्राप्त हूआ है और किसी को नहीं हो सकता तो फिर केस रखने का नियम भी उसी नुरु नाम वाले गड्डरिये के ऊपर ही लागू हो सकता है और किसी अन्य के ऊपर नहीं इसलिये इस

प्रमाण के अधीन फिर सबही गुरु घर के प्रेमी नहीं हो सकते। यदि यह आग्रह किया जाय कि इस जनम साखी का प्रमाण हम सर्व सिक्ख पन्थ के लिये मुख्य मानते हैं तो इसी भाई मनी सिंह वाली जनम साखी में ही पृष्ट ३९ पर लिखा है कि जब तीन वर्ष का हूआ तो इक दिन माता और पिता पास आकर बैठे तो उन्हों ने पूछा कौन सी पोथी पड़ता हैं तो बाबे कहा मैं स्पत श्लोकी गीता पड़ता हूं तो उन्हों ने कहा हमको भी सुना दो तो बाबे ने कहा सुनो। ओ मित्ये-काक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्..........आदि सुनाई। अतः पूर्वोक्त जनम साखी में श्री गुरुनानक देव जी स्पत श्लोकी गीता का पाठ प्रति दिन अपना इष्द समझकर करते सिद्ध होते हैं और वहि सात श्लोक आज इस १८ अध्याय वाली गीता में से मिलते हैं। जैसे ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म वाला श्लोक श्री मद् भगवद् गीता के अध्याय ८ में श्लोक १३ हैं इसी तरह और भी हैं, तो श्री गुरु नानक देव जी के श्रद्धालू प्रेमियों को चाहिये कि परंपरा से अपना इष्ट देव श्री मद्भगवद् गीता को ही माने। यदि इष्ट देव श्री गीता को नहीं मानते तो पूर्वोक्त उसी जनम साखी के

प्रमाण के आधार पर केवल केश रखने कैसे माने जा सकते हैं। तथा श्री गीता जी को यदि अपना इष्ट देव मान लें तो फिर इस श्री गीता में यह कहीं भी नहीं लिखा कि केशों के बिना मनुष्य धर्मात्मा नहीं हो सकता तो भी केश रखने आवश्यक नहीं रहते।

(४७) प्रश्न:—बाबा स्वरुप दास जी भल्ले अपने लिखे हूये महिमाँ प्रकाश में कहते हैं कि, सुहृद् देख प्रभ दया करि ताहिं कही समझाइ। मम द्वार सिक्ख को करे बिघन न होवे काइ। भाव जब महिमां प्रकाश में सींहें के पुत्र का मुण्डन होने की जगह सिक्ख हूया लिखा है तो सूर्य प्रकाश मे लिखा हूया मुण्डन कराने वाला प्रमाण आप जी की क्या सहायता कर सकता है।

उत्तर:—पहिले तो पूर्वोक्त प्रमाण में। सिक्ख को करे। लिखा है इसका अर्थ यह तो हो ही नहीं सकता कि पांच ककार धारी हमारा सिक्ख करो क्योंकि आप मानते हैं कि पांच ककार धारण रूप सिक्खी श्री दसमेश जी ने प्रकट की है इसलिये गुरु अङ्गद देव जी के समय सिक्ख सहज धारी ही होते थे केश धारी

नहीं। इस में से भी आपका मनोर्थ पूरा नहीं हो सकता ।

शेष सूर्य प्रकाश के प्रमाण को यदि आप कवि कृत होने से प्रमाणिक नहीं मानते तो पूर्वोक्त महिमा प्रकाश का प्रमाण भी कौन सा श्री मुखवाक प्रमाण है यह भी एक कवि कृत पुस्तक है। तों इसको किस नियम को सामने रख कर प्रमाणिक माना जा सकता है। और इसी बाबा स्वरूप दास जी के लिखे हूये सहिमाँ प्रकाश के लिये सिक्ख पन्थ के माने हूये पन्थ रत्न भाई साहब भाई वीरसिंह जी अपनी लिखी हूई गुर प्रताप सूर्य ग्रन्थाधली की प्रसतावता भूमिका पृष्ट १७ पर लिखते हैं कि। आगे दूसरा महिमाँ प्रकाश स्वरूप दास वाला है इसके प्रसंग बडे मानने योग्य हैं पर यह भी छान बीन का लोड़ बन्द (इच्छावान) है अतः पूर्वोक्त पन्थ रत्न जी भी जब इस पुस्तक की छान बीन की आवश्यकता रखते है तो जान पड़ता है कि इसमें अभी कई प्रकार की भूलें हैं और सूर्य प्रकाश रास ३ अंसू ४५ छन्द २८ प्रसंग भाई लद्धे उपकारी। की टिपणी में पूर्वोक्त पन्थ रत्न भाई बीर सिंह जी इसे महिमाँ प्रकाश के लेख को व्यर्थ सिद्ध भी

करते हैं । यथा, महिमाँ प्रकाश मे यह कथा तीसरे पातशाह के समय हूई लिखी है । भाई गुरदास जी की ११ वार की २५ पौड़ी में भाई लद्धा पर उपकारी पंचम पातशाह के समय हूये सिक्खों में लिखे हैं जिस से भी सपष्ट है कि यह प्रसंग पाँचवी पातशाही के समय का है । तथाः पूर्वोक्त पंथ रत्न भाई सः भाई वीरसिंह जी देवी पूजन पड़ताल, तीसरी वार छपी में भीं इस महिमाँ प्रकाश का खण्डन करते है यथा: इसी पुस्तक में देवी को सतगुरों की आन मानने वाली लिखा है फिर पूजी गई पता नहीं कैसे लिखा है पृष्ट ५७ पूर्वोक्त महिमाँ प्रकाश के कर्त्ता कों जब यह भी पता नहीं कि लद्धा पर उपकारी पाँचवें गुरु जी के समय हूये हैं तो और सींहे के पुत्र के मुण्डन की सच्चाई के पते की उस से क्या आशा हो सकती हैं ।

तथा सिक्ख पन्थ के विद्वान जब इस महिमां प्रकाश का स्वयं खण्डन करते हैं तो उसी के प्रमाण से सींहें के पुत्र को सिक्ख किया गया कैसे माना जा सकता है ।

अतः पूर्वोक्त सूयं प्रकाश वाला सींहे के पुत्र का मुण्डन ही ठीक है ।

(४८) प्रश्नः—गणेश खण्डन अंक ६ में बताए अनुसार आपका कथन श्री मुख वाक बाणी बल्कि ऊपर दिये गए जनम साखी और महिमां प्रकाश वाले इतिहासिक प्रमाणों के भी प्रतिकूल होने के कारन प्रत्यक्ष ही इतिहासकार की भूल या अन्य मत वालों की ओर से मिलावट है (गुरमत दर्शन पृष्ट १११)

उत्तरः—आपने जो पीछे श्री मुख वाक प्रमाण प्रकट किये हैं उन्हों का उत्तर पीछे इसी के प्रश्न नं: २३ और प्रश्न ४५ में दिया जा चुका है उन प्रमाणों में कहीं भी केश रखने का कथन नहीं तो व्यर्थ जबर दस्ती श्री मुख वाक बाणी के प्रमाणों के प्रति कूल हैं कही जातेहैं और पूर्वोक्त जनम साखी और महिमां प्रकाश के प्रमाणों की भी सच्चाई पीछे इसी के प्रश्न नं: ४६ और ४७ में प्रकट की जा चुकी है यदि कोई आग्रह ही है तो आप बताएं आप ने कौन से श्री मुख वाक बाणी के प्रमाण में यह दिखाया है कि मुण्डन कराना पाप रूप है या केशों के बिना मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती यां मनुष्य धर्मी नहीं हो सकता या मनुष्य कोई संसारक उन्नति नहीं कर सकता यदि इन्हों में से कुछ भी नहीं दिखा सके तो

फिर सूर्य प्रकाश वाला मुण्डन श्री मुख वाक बाणी के विरुद्ध कैसे कह दिया। क्या मनो कल्पना से ही।

शेष जनम साखी या महिमां प्रकाश के प्रमाण यदि सूर्य प्रकाश के प्रमाण को भूल या मिलावट सिद्ध करते हैं तो तैसे सूर्य प्रकाश का प्रमाण भी पूर्वोक्त जनम साखी और महिमां प्रकाश के प्रमाणों को भूल या मिलावट सिद्ध कर रहा है तो फिर केश रखने आवश्यक हैं कैसे सिद्ध हूये।

(४९) प्रश्न:—सींहे को गुरु जी ने पुत्रों के मुण्डन कराने के लिये नहीं था कहा भाव वह पुत्रों का मुण्डन तो पहले ही कराना चाहता था और इसीलिये छत्तरे भी लिये जाता था परन्तु सिक्ख होने से पहिले श्री गुरु सहिबों ने रीतों रसमों को तोड़ने के लिये किसी को भी तंग (बाध्य) नहीं किया क्योंकि जो पुरुष पाखन्डी मुखियों के प्रभाव के नीचे आए हूये हों वह एक बार ही सब ही कुरीतियें नही त्याग सकते।

उत्तर यह ठीक है कि सींहा पुत्र का मुण्डन पहिले ही कराना चाहता था। पर प्रश्न तो यह है कि आप के निश्चय अनुसार जब श्री गुरु जी मुण्डन कराने के अत्यन्त विरुद्ध थे तो उन्हों ने यह कैसे मान

लिया कि । हमारे आगे मुण्डन करो। क्योंकि आपने सिद्धांत के विरुद्ध कोई उत्तर दायी महां पुरुष आज्ञा नहीं दे सकता: इसी से ही सिद्ध होता है कि गुरु जी मुण्डन के विरुद्ध नहीं थे और ऊपर आप भी मान रहे हैं कि श्री गुरु सहिबों ने पहिले रीतों रसमों को तोड़ने के लिये किसी को भी वाध्य नहीं किया ।

शेष एक ही बार सबही कुरीतियें त्याग नहीं सकने वाला भी एक ढोंग ही सिद्ध होता है नहीं तो सींहें को गुरु जी ने क्या एक दो बार मुण्डन कराने से रोका था कि मुण्डन ना करों जिसलिये सींहें को ना मानता देख कर गुरु जी ने मुण्डन करने की आज्ञा दे दी मान ली जाय । तथा पीछे के बाल्मीकि डाकू = दस्यु आदकों के प्रसंग मिलते हैं जो महात्मां के उपदेश करने से ऐक बार ही सर्व नीच कर्म त्याग कर ऋषी हों गए और अपना पक्ष सिद्ध करने के लिये पूर्वोक्त प्रश्न में जो आपने यह दलील प्रकट की है कि गुरु सहबों ने सिक्ख होने से पहिले किसी को भी रीतों रसमों तोड़ने के लिये बाघ्य नहीं किया तो इस का अभिप्राय यह सिद्ध हूया कि सिक्ख बना लेने के पश्चात रीतों रसमों को तोड़ने के लिये बाध्य करते

थे अतः यह दलील गुरू सहिबों जैसी उच्च हस्ती के लिये कह देनी ठीक नही जचती ।

(५०) प्रश्नः—बाबा राम कुयर वाले प्रसंग से उल्टा यह सिद्ध हूया कि श्री गुरु जी के हजूरी सिक्खों में से एक राम कुयर जी के सिर पर केश नहीं थे जो गुरू सिक्खी से उल्ट समझकर सिक्खों ने गुरू जी के हजूर यह विचार प्रकट की कि इन्हीं के सिर पर भी केश होने चाहिये ।

उत्तरः—इस प्रसंग से केवल यहि सिद्ध नहीं हूया किन्तू साथ ही यह भी सिद्ध हूया कि केश धारियों से केश रहत सिख सिक्खी का विशेष पद (दर्जा) प्राप्त करते थे । पूर्वोक्त प्रसंग में सिक्खों ने ही कहा है कि, राम कुयर जी सिक्ख विशेष । भाव राम कुयर जी आप के सिखों में से विशेष सिख हैं और राम कुयर जी के सिर पर केश नहीं थे तो एक राम कुयर जी को ही गुरु जी ने कहा है कि । मोहि स्वरूप अहे सो तेरो अथवा, तुम सिखन के हो सिर मौर । समता पहुँच ना सकै है और । आदि यह किसी अन्य केश धारी सिखों को यहां पर इतना ऊँचा पद नहीं दिया और गुर सिखी से उल्ट समझ कर यदि सिक्खों ने गुरू जी

कर लिये और सिंघ सज के गुर बखश सिंह नाम रखवाया:-

उत्तरः— बाबा राम कुयर जी ने सिंघ सजके गुर बखश सिंह नाम रखवाया यह आप जी को ही पता होगा पर ऊपर जो उक्ति प्रकट की है यह तो डूबते हूये को तिनके के सहारे वाली बात है, क्योंकि एक ओर तो प्रमाण प्रकट करते हो कि। बिना तेग केसं दिवो न दिदारे। बल्कि गुरु जी ने जगह जगह पर हूकम नामे (आज्ञा पत्र) भी लिख दिये कि। केस धार सिर पर सिख आवें। आदि और दूसरी ओर यहां पर कह रहै हैं कि गुरु जी ने रामकुयर जी को प्रशंसा भरी युक्ति के साथ केश रखने की प्रेरणा की और कहा कि तेरे और मेरे में भेद नहीं।

श्री मान जी जब गुरु जी पीछे हुकम नामें भेज चुके हैं और मेरे को कोई सिख तेग और केशों के बिना दर्शन भी न देवे यह प्रतिज्ञा भी कर चुके हैं तो यहां पर गुरु जी अपने हुकम नामों और प्रतिज्ञा के विरुद्ध रामकुयर जी को बिना केशों के देखकर के यह कैसे कह सकते थे कि तेरे और मेरे में भेद कोई नही किन्तू गुरु जी को तो आप के प्रकट किये प्रमाणों

अनुसार कहना चाहिये था कि जब तक केश न धारण करो तब तक मैं आप के दर्शन भी नहीं कर सकता परन्तु गुरु जी पूर्वोक्त कहते हैं । तोहि मोहि महि भेद नां कोउ । एक रूप के तन है दोऊ । तथा गुरु जी गुरू थे वह सिख पर आज्ञा कर सकते थे उन्हों को राम कुयर सिख की उपमां करके प्रशंसा भरी युक्ति के साथ केश रखने की प्रेरणा करने की क्या आवश्कता थी और केश धारण करने से पहिले ही यह कैसे ऊँचा पद दे दिया कि तुम सिखन के हो सिरमौर, समता पहुच न सक है और । क्या गुरुसहिबों ने ऊँचे पदों के लोभ देकर ही सिख बनाए थे अपनी सच्चाई बल के साथ नहीं थे बनोए अतः यह सब दलीलें ब्यर्थ हैं । गुरु जी सच्चे गुरु थे ।

शेष आपने जो उचित केस रखबे सिख जाने । का अर्थ किया है कि भाव तुम्हारे सिर पर भी केश होने सिख उचित समझते हैं । यह भी आगे वाली पंक्तियों के साथ मेल नहीं खाता क्योंकि आगे पाठ है । इसके सिर पर भी बड केस । नित अन्तर को वधहि विशेष । अपर्न के सिर ऊपर बाहिर । सभके सकल विलोक्त जाहिर, इसके अन्तर वधहि हमेश

जाहि तरे को दीर्घ केस । भाव इस राम कुयर के सिर पर भी बड़े केश हैं नित्य अन्दर को विशेष करके बड़ते हैं अन्यों के सिर पर बाहर केश हैं जो प्रत्यक्ष दीखते हैं किन्तू इसके अन्दर को नित्य बड़ते हैं, जाते हैं नीचे को दीर्घ केश । जब गुरु जी राम कुयर जी के अन्दर भक्ति ज्ञान आदि साधनों रूपी केश बड़ते कह कर राम कुयर जी की दूसरे सिक्खों से विशेष उपमां करते हैं तो वहां पर यह अर्थ क्या अर्थ रखता है कि गुरु जी कहते हैं कि यह सिख तुम्हारे सिर पर भी केश होने उचित समझते हैं । किन्तू यहां पर अर्थ यह है कि यह राम कुयर जी हमारा सिख उचित केश रखने जानता है जो आगे की पंक्तियों में कह दिये कि इसके केश अन्दर को बड़ते हैं और आप लोगों के बाहर को । तिस कारन ते भुज गहि पानी । इसी कारन करके मैं पानि=हाथ के साथ इस सिख की भुजा गहि =पकड़ी है अत: जब गुरु जी ने राम कुयर जी को यहां पर केश रखने के लिये इशारा (सैन) तक भी नहीं किया तो श्री राम कुयर जी ऊपर प्रभाव क्या पड़ा जिस लिये कह रहे हैं कि उसने केश रख लिये और सिंघ सज गया बल्कि प्रश्न करन वाले सिक्खों को

गुरु जो ने निरुत्तर कर दिया और राम कुयर जी को उन्हों का सिरमौर कहकर सिरताज = श्रोमणि बना दिया तो फिर राम कुयर जी के ऊपर केश रखने का प्रभाव कैसे पड़ गया । इस लिये सिद्ध होता है श्री दसमेश जी श्रद्धा भक्ति ज्ञान सत्य सन्तोष आदि ही सिखी के साधन मानते थे केश आदि नहीं । और ईश्वर प्राप्ति का साधन भी दसम गुरू जी फरमाते हैं, जिन प्रेम कियो तिनही प्रभु पायो । अतः केश आदि नहीं ।

तथाः सौ साखी की साखी ६२ में लिखा है। केसवान बिन केस होय मेरा होय निसंग । बामरण सोई विश्रास सम देवे दान उमंग ।

(५२) प्रश्नः—इतिहासक प्रमारण वहि प्रमारिणक है जो गुर बारणी अनुकूल हो परन्तु यहां पर हमको श्री मुख वाक बारणी की कसौटी की भी इसलिये आवश्यकता नहीं कि सूर्य प्रकाश की रुत ५ और अंसू ३७ में यह लिखा है कि । द्विज बिन केस पाहुल जो धारे । तिस पाखण्डी दूर निवारे । भाव जो यह कहे कि मैं अन्दरों मन से सिक्ख हो चुका हूं केशों की क्या आवश्यकता है तिस पाखण्डी से दुर रहो अथवा

तिसको दूर करो ।

उत्तरः—पूर्वोक्त नियम क्या लोगों के लिये ही आप ने कायम किया है क्योंकि आप कहे रहे हैं कि हम को श्री मुखवाक बाणी की कसौटो की भी आवश्य कता नहीं । जान पड़ता है यहां पर इस सूर्य प्रकाश के प्रमाण को बिना गुरु बाणी की अनुकूलता प्राप्त किये ही प्रमाणिक मान रहे हैं यदि मान रहें हैं तो क्यों । इसी का नाम स्वार्थ है न्याय नहीं ।

बाकी यदि हठ ही हो कि यह प्रमाण यथार्थ ही हैं तो इसमें लिखा है । द्विज=ब्रह्मण बिना केशों के पाहुल धारण करे (अमृत छके) तो वह पाखण्डी है परन्तू जो ब्रह्मण अमृत ही नहीं छकता केवल मन से ही सच्चा प्रेमी है तो वह इस प्रमाण से पाखण्डीं = (दम्भी) कैसे हो सकतो है । यदि कहा जाए कि श्री दसमेश जी का अन्दरों मन करके सिक्ख होना कोई अर्थ नहीं रखता कि जब तक वह बाहर सिर पर केश ना रखे, तो ऐसे यह सिद्ध होगा कि गुरु घर में अन्दरों मन करके सच्चे प्रेम की सिखी की कोई आवश्यकता नहीं किन्तु केवल बाहर के चिह्न मात्र का नाम ही सिखी है तो यह प्रत्येक मनुष्य कर सकता

है फिर बहुत ज्ञानी जो यह प्रचार करते हैं कि, खत्रियों तिखी वालों निक्की सिखी है वह क्या है क्योंकि केवल चिह्न मात्र धारण करने कोई कठन नहीं ।

किन्तू खण्डे = तलवार की धार जैसी तीक्षण और केश से सूक्षम जो सिखी पूर्वोक्त ज्ञानी कहते हैं क्या यह केवल चिह्न मात्र धारण करने का ही नाम है ।

तथा यदि यहि निश्चय किया जाय कि केशों के बिना श्री दसमेश जी का अन्दरूनी सच्चे प्रेम मात्र से कोई सिक्ख नहीं हो सकता किन्तु वह दम्भी है उसको दूर करना ही सिक्खों के लिये गुरु जी की आज्ञा है तो यह आपत्ति सहज धारी सिक्खों के लिये है । क्योंकि सहज धारी सिक्ख वह होता है जिसके सिर पर केश ना हों और जिसके सिर पर केश हों वह केश धारी सिक्ख होता है अतः सहज धारी चाहे अन्दर से कैसा भी सच्चा प्रेमी हो फिर भी वह दम्भी ही होगा सिक्खों के लिये वह त्यागने योग्य ही है तो फिर सहज धारी सजन सोच लें कि उन्हें किस तर्फ जाना है या तो सीधे होकर वह केश धारी सिक्ख हो जाएँ और या फिर अपने प्राचीन हिन्दू धर्म की ओर हो

दर्शन देने की कृपा करें क्योंकि सहज धारी सिक्ख यह निश्चय किये फिरते हैं कि हम भी गुरु जी के सिक्ख हैं।

और पूर्वोक्त केश धारी हूये बिना गुरु जी का सिक्ख (कल्यानकारी) नहीं हो सकता यह बात श्री कबीर जी के इस वाक्य से भी मेल नही खाती यथा: सुन अन्धली लोई बे पीर। इनि मुण्डिअन भज सरन कबीर (गौंड कबीर जी) कि हें लोई इन मुण्डिअन= सिर मूण्डे सन्तों की शरण अपनी कल्यान के लिये भज।

यदि कहा जाए कि मुण्डिअन का अर्थ यहाँ पर सिर मूण्डे नहीं तो श्री गुरु ग्रन्थ कोश नं: ११० सैंची ८ पृष्ट ११५३ पर अर्थ किया है कि मुण्डिअन कहिये सिर मून्ने साध (सिर मुण्डे साधू) जो दूसरी वार सोध कर आगे से बड़ा करके खालसा टरैकट सुसाइटी अमृतसर ने वजीर हिन्द प्रैस अमृतसर में छपवाया हैं

अत: सिर मूण्डे सन्तों की शरण जाना श्री गुरु ग्रन्थ सहिब जी में से ही सिद्ध हो रहा है किन्तु केश कलयान का साधन होते तो श्री कबीर जी ऐसे कभी भी ना लिखते।

(५३) प्रश्न—कबीर जी के प्रशंसा करने से केशों का खण्डन या मण्डन नहीं हो सकता कारन यह कि इसी केश मण्डन की भूमिका में बताए अनुसार केशों को धार्मिक रहतों में शुमार कबीर जी के समय से पीछे गुरु कलगीधर जी ने किया है।

उत्तरः—गुरू कलगीधर (श्रीदसम गुरू) जी ने यदि केशों को धार्मिक रहतों में कबीर जी के प्रकट होंने से पीछे सम्मिलित किया है इसलिये यहां पर कबीर जी के इस वाक्य से केश खण्डन नहीं हो सकते तो आपने गुरमत दर्शन के पृष्ट १०१ पर इसी श्री कबीर जी के प्रमाण प्रकट करके केशों का मण्डन कौनसी युक्ति से सिद्ध करने का प्रयत्न किया है क्योंकि जब कबीर जी के समय केशों को धार्मिक रहतों में सम्मिलित होना ही नहीं माना जाता था भाव श्री कबीर जी केशों को कोई धार्मिक चिह्न या धर्म का कोई अंग अथवा मुकित आदि का साधन जब मानते ही नहीं थे तो उस कबीर जी के प्रमाणों का अर्थ यह कहां से लिया गया कि कबीर जीं ने केश मुण्डाने वालों को ताड़ना की है। क्योंकि ताड़ना तब करते यदि केश धार्मिक रहतों में होते अतः आप जी का

पीछे कथन किया कबीर जी के वाक्यों द्वारा केश मण्डन का प्रयत्न यहां पर आप ही व्यर्थ सिद्ध हो गया है और श्री कबीर जी यदि केश रखने गुरमुखों का लक्षरण मानते होते तो यहां पर लोई को सिर मूण्डे सन्तों की शरण जाने का उपदेश कभी ना करते उल्टा घृणा प्रकट करते।

(५४) प्रश्न:—यदि कबीर जी कभी पहिली अवस्था में केश हीन रहे भी हों तो भी केश खण्डन नहीं हो सकते क्योंकि इसी केश मण्डन के अंक १ में उन्हों की अपनी बाणी से ही केश मण्डन किये गए हैं और, रैन दिवस तेरे पाउ पलोसउ केस चवर कर फेरी, आदि उच्चरे उन्हों के अपने वाक्यों से ही वह केश धारी भी सिद्ध होते हैं (गुरमत दर्शन पृष्ट ११५)

उत्तर:—पता नहीं केश मण्डन की विधि क्या हैं क्योंकि ऊपर स्वयं लिखते हैं कि कबीर जी के होने से पीछे केशों को धार्मिक रहतों में शुमार किया गया है तो फिर कबीर जी ने यदि केवल अपनी रुची के आधीन- केश रख भी लिये हों तो भी उन्हों के केश रखने का यहां पर क्या प्रभाव पड़ सकता है किन्तु प्रभाव तब पड़ सकता था यदि कबीर जी भी केशों को धर्म का

कोई अंग मानते होते । यदि कहा जाय कि श्री कबीर जी के समय भी केशों को धार्मिक रहतों में सम्मिलित किया जाता था तो पूर्वोक्त आप का यह लिखना व्यर्थ हो गया कि श्री दसमेश जी ने केशों को धार्मिक रहतों में सम्मिलित किया है क्योंकि फिर तो आगे = पहिले ही केश धार्मिक रहतों में सम्मिलित थे फिर श्री कलगीधर (दसमगुरु) जी ने पहिले ही सम्मिलित हो चुके हूओं को और सम्मिलित क्या करना था

शेष पूर्वोक्त । केस चवर कर फेरी । आदि प्रमाण का भी भाव पीछे इसी के प्रश्न नं० ४५ में, केसां का कर चवर ढुलावां । आदि के ऊत्तर में बताया जा चुका है कि केशों का चवर भी बिना केश कटवाने के नहीं बन सकता अतः केश रखने सिद्ध नहीं होते उल्टा मुण्डाने ही सिद्ध होते हैं और कबीर जी की बाणी के जिन प्रमाणों द्वारा केश मण्डन किये हैं उन्हों का भी पीछे इसी के प्रश्न नं० ३३ में उत्तर दिया गया है कि जो केश मुण्डानें मात्र में ही मुक्ति मानते हैं उन्हों का ही खण्डन किया गया है किन्तू जो लोग अपनी शारीरिक सफाई के लिये केश मुण्डाते हैं उन्हों के ऊपर वह प्रमाण लागू नहीं हो सकते और यदि यहि कहा जाय

कि श्री कबीर जी पहिली अवस्था में केश हीन रहे होंगे किन्तू पीछे वह केस धारी ही रहे थे तो श्री कबीर जी की जो आज कल चेला का चेला होकर संप्रदाय चलती है वह अवश्यक केशधारी होनी चाहिये थी प्ररन्तु हम हरिद्वार आदि तीर्थो पर कुंभों के समय कबोर पन्थी साधू देखते हैं वह केश हीन होते हैं बल्कि बीच कई यज्ञोपवीत और चोटी धारी भी होते हैं क्योंकि कबोर (गुरू) जी का स्वांग उन्हों के चेलों का भी होना योग्य है यदि कहा जाए कि कबीर जी ने पहिली अवस्था में ही चेले बनाए होंगे तो यह कोई उक्ति वजन नहीं रखती क्योंकि अज्ञान काल का बना हूया चेला प्रमाणिक ही नहीं हो सकता तो वह संप्रदाय कैसे प्रमाणिक हो सकती है । और कारन क्या दिखाया जा सकता है कि श्री कबीर जी के ज्ञानावस्था का उपदेश सुन कर कोई चेला नहीं था बना । भाव ज्ञानावस्था में क्या निर्बलता थी और यदि कोई ज्ञान काल में चेला बना है तो उसकी आज कबीर पंथ में कौन सी संप्रदाय है जो केशधारी ही रहती है और केश रखने अपने मत में कोई धर्म का अंग या कोई मुक्ति का साधन मानती है अत यह बात

खोज किये बिना ही कहनी कि कबीर जी पहिली अवस्था में केश हीन हो सकते हैं पर पीछे केशधारी साबत होते हैं यह फीकी = निरस है ।

भूल की शुद्धि

पृष्ट	लाइन	अशुद्ध	शुद्धि
१२	१४	हा	ही
१५	४	पाया था	पाप था
२१	४	आसमर्थ	असमर्थ
६६	१६	परमामा	परमात्मा
८५	५	र्वोक्तपू	पूर्वोक्त
६२	६	कालो	काली
१२८	१६	दलोल	दलील

रुण्डित, मुण्डित, मुण्डन, मुण्डाना, मुण्डाते, मुण्डवाते, मुण्डाए मूण्डा, मूण्ड, की जगह पहले कुछ फरमयों में भूल से, रुन्डित, मुन्डित, मुन्डन, मुन्डाना, मुन्डाते, मुन्डवाते, मुन्ड्वाए, मून्डा, मून्ड, यह शब्द छप गए हैं, वहां ऊपर किये गए शुद्ध शब्दों को ही पढ़ने की कृपा करें तथाः धारण की जगह धार्ण, शरण की जगह शर्ण शब्द छप गए हैं बल्कि और भी परुफ सुधाई में जहां अशुद्धि हो गई होगी वहां पढ़ने वाले श्री महोदय स्वयं शब्द शुद्ध करके पढ़ने का कष्ट करें।

प्रार्थी—प्रकाशक

अकाल प्रकाश

निःशुल्क (बिना मूल्य) मिल सकती हैं किन्तू डाक व्यय के बुक पोस्ट पार्सिल के लिये केवल १७ नये पैसे भेजने पड़ेंगे।

१. अकाल प्रकाश बग्गा ११|३३३३ कूचा जलाल बुखारी दरिया गंज दिल्ली,

२. अकाल प्रकाश बग्गा मार्फत श्री गुसांई प्रीतम दासजी बीं—८२ कालकाजी नई दिल्ली,

३. सूबाराम हकीम बहादर गढ़ जिला रोहतक,

४. स्वयं जाकर यह पुस्तक दस्ती लेने का स्थानः— श्री गुरुबाबा श्री चन्द्र जी का प्राचीन मन्दर, कनखल (हरिद्वार)। उत्तर प्रदेश।